कृषि | विश्लेषण | जल प्रबंधन

कुल पृष्ठः 40

स्वदेशी पत्रिका

मूल्य 15/–रू.

आषाढ़–श्रावण 2079, जुलाई 2022

सेना में भर्ती का 'अग्निपथ'

VOICE OF SELF RELIANT INDIA

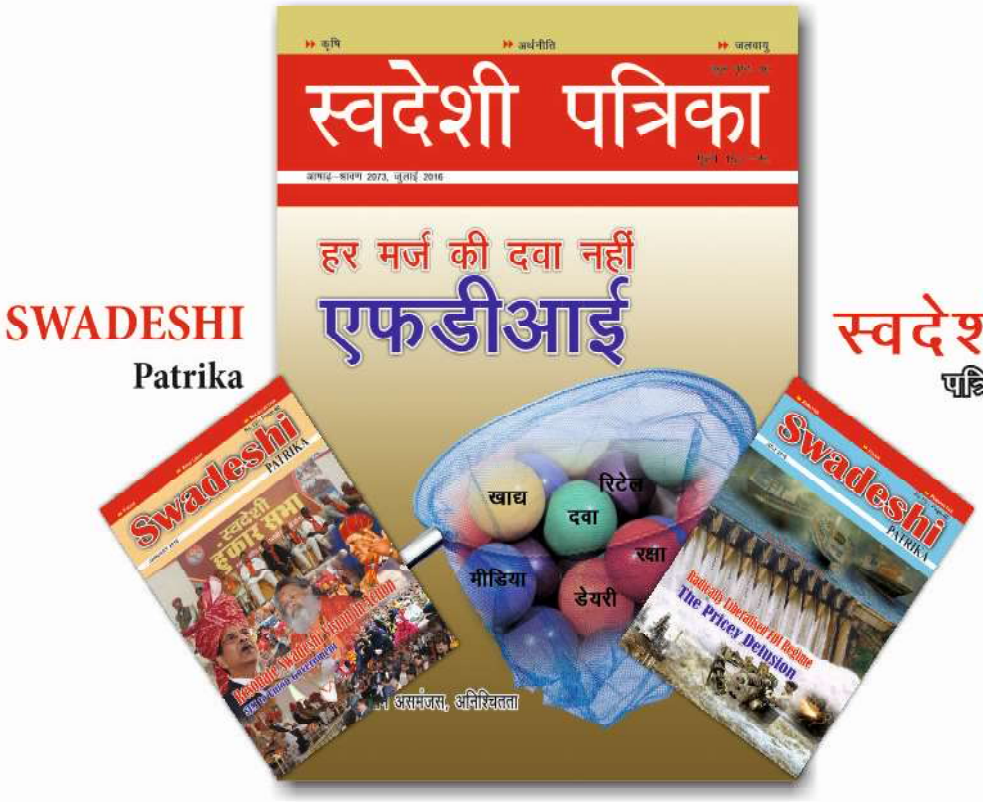

SWADESHI Patrika

स्वदेशी पत्रिका

वार्षिक सदस्यता (Annual Subscription) :	150/-
आजीवन सदस्यता (Life Membership) :	1500/-

For subscription please send payment by A/c payee Cheque/Demand Draft/Money Order in favour of 'Swadeshi Patrika' at New Delhi, or Deposit the subscription amount in

Bank of India, *A/c No.* **602510110002740,**
IFSC: BKID 0006025 (Ramakrishnapuram)

Kindly write your full name and address in capital letters.
If you do not receive any issue of Swadeshi Patrika, kindly e-mail us immediately or contact **Sh. Suraj Bhardwaj (9899225926)**

पढ़ें और पढ़ायें

स्वदेशी पत्रिका

अनुक्रम

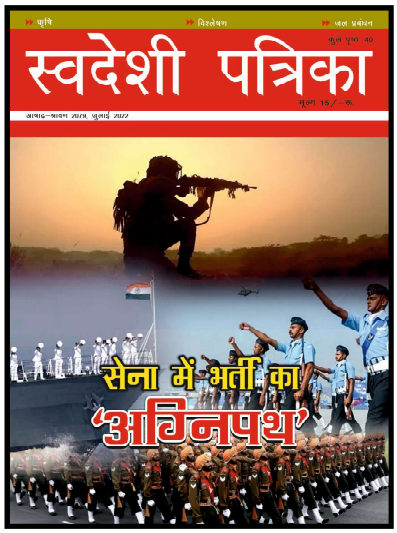

वर्ष–30, अंक–7
आषाढ़–श्रावण 2079 जुलाई 2022

संपादक
अजेय भारती

सह–संपादक
अनिल तिवारी

पृष्ठ सज्जा एवं टंकन
सुदामा दीक्षित

कार्यालय
धर्मक्षेत्र, सेक्टर–8, बाबू गेनू मार्ग
रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022
से प्रकाशित
दूरभाष : 011–26184595
स्वदेशी जागरण समिति की ओर से डॉ. अश्वनी महाजन द्वारा कॉम्पीटेंट बाइन्डर्स (प्रिंटिंग यूनिट), नवीन शाहदरा, दिल्ली–32 से मुद्रित।

पाठकनामा/उन्होंने कहा **4**
समाचार परिक्रमा **35-38**

तृतीय मुख्य पृष्ठ **39**
चतुर्थ मुख्य पृष्ठ **40**

आवरण कथा – पृष्ठ–06
सेना में भर्ती का 'अग्निपथ'
डॉ. अश्वनी महाजन

1 मुख्य पृष्ठ
2 द्वितीय मुख्य पृष्ठ

08 आवरण कथा
अग्निपथ योजना को समझने की जरुरत
सूर्य प्रकाश अग्रवाल

10 आजकल
पश्चिमी देशों का प्रपंच है पर्यावरण रैंकिंग
अनिल तिवारी

13 विचार
कायदा–कानून से ही लोकतंत्र को मिलती है मजबूती
अनिल जवलेकर

15 बहस
चीन के कर्ज का मकड़जालः श्रीलंका ने खुद दी आफत को दावत
वैदेही

17 पर्यावरण
पर्यावरण सुरक्षा के लिए प्लास्टिक पर प्रतिबंध आवश्यक
स्वदेशी संवाद

19 खाद्य सुरक्षा
देश का भविष्य हथियार नहीं, खाद्यान्न है
देविन्दर शर्मा

23 विश्लेषण
बन्दूकों से त्रस्त अमरीकी जनता
स्वदेशी संवाद

25 जल प्रबंधन
फिर गहराई बाढ़ की विभीषिका
डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र

27 अर्थव्यवस्था
भारतीय अर्थव्यवस्था में गुणात्मक सुधार
शिवनंदन लाल

29 समीक्षा
अधर में लटक सकता है बीआरआई का भविष्य
स्वदेशी संवाद

31 बैंकिंग
डिजिटल लेन–देन से बढ़ती आत्मनिर्भरता
विकास सिन्हा

33 योग
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवसः योग से महिलाएं भी रहे निरोग
विनोद जौहरी

पाठकनामा

'त्याग' के साथ हो 'उपभोग'

प्रतिवर्ष 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जाता है। इधर कई दिनों से सोशल मीडिया पर यह खबर चल रही है कि अगले साल भारत आबादी के मामले में चीन से आगे निकल जाएगा। ऐसे में जनसंख्या दिवस का उत्सव मनाने की जगह यहां के लोग चिंता में पड़ गए हैं। दरअसल चिंता यह है कि दुनिया की आबादी इसी रफ्तार से बढ़ती रही तो अगले 30 साल में दुनिया की कुल आबादी 10 अरब हो जाएगी। इतने लोगों के लिए भोजन, कपड़े, निवास और रोजगार की क्या व्यवस्था होगी? क्या यह पृथ्वी इंसान के रहने के लायक बच पाएगी? पृथ्वी का क्षेत्रफल तो बढ़ना नहीं है, क्या यहां के लोग दूसरे ग्रहों पर जाकर बसेंगे? क्या यह पृथ्वी नरक नहीं हो जाएगी? रोज–रोज बढ़ता प्रदूषण, क्या मनुष्य को जिंदा रहने लायक छोड़ेगा, इस तरह के ढेर सारे सवाल उठाए जा रहे हैं।

गणित के हिसाब से देखें तो अब से 75 साल पहले दुनिया की आबादी सिर्फ ढाई अरब थी। लेकिन इन 75 सालों में बढ़कर 8 अरब के आसपास हो गई है। ठंडे दिमाग से सोचा जाए तो 75 साल पहले ढाई अरब को जो सुविधाएं मिलती थी क्या 75 साल बाद 8 अरब लोगों को उससे कम सुविधाएं मिलती हैं? इसका उत्तर 'न' में है। दरअसल इस दौरान हमने बहुत सारी वैज्ञानिक प्रगति की है। मृत्यु पर भी हमने काबू किया है। पहले जहां 50 साल के बाद लोगों को मृत्यु घेर लेती थी, अब 70 साल तक का जीवन आम हो गया है।

गणितीय हल के मुताबिक अगर इंडिया की आबादी 12 से 15 अरब भी हो जाए तो उसका प्रबंधन किया जा सकता है। खेती की उपज बढ़ाने, प्रदूषण घटाने, पानी की बचत करने, शाकाहार बढ़ाने और जूठन न छोड़ने के अभियान यदि सभी सरकारें और जनता निष्ठापूर्वक चलाएं तो मानव जाति को अभी कोई खतरा नहीं है। लेकिन सारे संसार में उपभोक्तावाद की लहर आई है। हर आदमी जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करना चाहता है। यह गलत है। बढ़ती आबादी की समस्या से निपटने के लिए भारतीय विचारधारा, जो कि त्यागपूर्ण जीवन में विश्वास करती है, का अनुसरण करना चाहिए। 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' यानि त्याग के साथ उपभोग करें तो आबादी के सामने कोई संकट नहीं होगा।

डॉ. पराक्रम सिंह, धुंधुरी, आजमगढ़, उ.प्र.

आवश्यक नहीं कि इस अंक के भीतर प्रस्तुत लेखकों के विचार स्वदेशी पत्रिका के संपादक मंडल के विचारों से मेल खाते हों। पाठकों की जानकारी के लिए उन्हें यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

संपादकीय कार्यालय

''धर्मक्षेत्र'' शिव शक्ति मन्दिर, सैक्टर–8, रामकृष्णपुरम्,
नयी दिल्ली–110022

दूरभाष : 011–26184595 • ई–मेलः
swadeshipatrika@rediffmail.com

अगर आप घर बैठे स्वदेशी पत्रिका चाहते हैं तो डिमांड ड्राफ्ट, मनीऑर्डर अथवा चेक द्वारा शुल्क *'स्वदेशी पत्रिका'* दिल्ली के नाम भेजने का कष्ट करें।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 150 रुपए
आजीवन सदस्यता शुल्क: 15,00 रुपए

यदि शुल्क जमा करने के उपरांत भी आपको पत्रिका समय पर उपलब्ध नहीं हो पा रही है तो तुरंत पत्रिका कार्यालय को सूचित करें।

या आप सीधे बैंक ऑफ इंडिया, खाता नं. 602510110002740
IFSC : BKID 0006025 (Ramakrishnapuram)

कहा–अनकहा

अमृत महोत्सव न केवल सैकड़ों वर्षों की गुलामी से मुक्ति की विजय गाथा है, बल्कि स्वतंत्रता के बाद के 75 वर्षों की यात्रा को भी समेटे हुए है। हम इतिहास के हर महत्वपूर्ण पड़ाव से सीखते हुए आगे बढ़ते हैं।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

हमें अपनी सभी भारतीय भाषाओं की जीवंतता को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना चाहिए। सरकार शैक्षिक उद्देश्यों के लिए 200 नए टीवी चैनलों के साथ आने का प्रयास कर रही है, जिसमें प्रत्येक भाषा में प्रत्येक वर्ग के लिए एक चैनल शामिल है।

धर्मेन्द्र प्रधान, केंद्रीय शिक्षा मंत्री, भारत

निगम और रसायन दुनिया का पेट नहीं भरते हैं। वे भूख और बीमारी, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान का कारण बनते हैं। छोटे किसान, महिलाएं, जैव विविधता, मिट्टी के जीव, कीड़े और परागकण स्वस्थ भोजन उगाते हैं जो जीवन को पोषण देता है।

पीयूष गोयल, वाणिज्य और उद्योग मंत्री, भारत सरकार

संपादकीय

यूरोप, अमरीका पर भारी पड़ते उन्हीं के प्रतिबंध

फरवरी 2022 से चल रहे रूस–यूक्रेन युद्ध के दुष्परिणाम आज पूरी दुनिया भुगत रही है। गौरतलब है कि यूक्रेन द्वारा 'नाटो' से पींगें बढ़ाने से नाराज रूस ने यूक्रेन पर आक्रमण कर दिया था, जिससे यूक्रेन में तो भारी जान–माल का नुकसान हुआ ही, लेकिन उस युद्ध से उपजी वैश्विक आर्थिक समस्याओं से निजात निकट भविष्य में दिखाई नहीं दे रहा। तेल की बढ़ती कीमतें, आपूर्ति श्रृंखला में आई बाधाएं, खाद्यान्न की कमी और उसके कारण सभी मुल्कों में प्रभावित होती ग्रोथ और बढ़ती कीमतों ने दुनिया के हर आदमी को प्रभावित किया है। अमरीका और उसके मित्र यूरोपीय देशों द्वारा रूस को सबक सिखाने के उद्देश्य से आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए। अमरीका का मानना था कि इन प्रतिबंधों के कारण रूसी अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी। लेकिन रूसी अर्थव्यवस्था तो ध्वस्त नहीं हुई लेकिन इन प्रतिबंधों का खासा असर पश्चिम के देशों पर देखने को ज़रूर मिल रहा है। गौरतलब है कि रूस दुनिया में गैस और कच्चे तेल का बड़ा आपूर्तिकर्ता है। दुनिया में पेट्रोलियम की पदार्थों की आपूर्ति में रूस का दबदबा है। वो पेट्रोलियम पदार्थों का सबसे बड़ा और कच्चे तेल का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश है। अमरीका और यूरोप के देशों ने रूस को अपनी भुगतान प्रणाली 'स्विफ्ट' से प्रतिबंधित कर दिया। अमरीका की योजना यह थी कि ऐसे में रूस अपने तेल को नहीं बेच पाएगा, जिससे उसकी वित्तीय रीढ़ टूट जाएगी। लेकिन रूस की रणनीति ने अमरीका की अपेक्षाओं पर पानी फेर दिया और आज अमरीका और उसके मित्र यूरोपीय देशों को भारी आर्थिक संकट आते दिखाई दे रहे हैं। यह समझते हुए कि दुनिया में बढ़ती तेल कीमतों के कारण यूरोप समेत सभी देश सस्ते तेल की खोज में रूस की शरण में ही आएंगे, एक तरफ़ रूस ने अपने तेल की आपूर्ति भारत को सस्ते दामों पर और रूपए में करना शुरू कर दिया और भारत ने रुस से तेल आयात 50 गुना बढ़ा दिया। दूसरी तरफ़ उसे यूरोपीय देशों से तेल भुगतानों में कोई बाधा नहीं आई। यूरोपीय देश चूंकि रूस से सस्ते तेल पर निर्भर हो रहे थे, उन्होंने स्वयं के प्रतिबंधों को ही दरकिनार करते हुए रूस से तेल खरीदना जारी रखा। उसके बाद यूरोपीय देशों द्वारा आर्थिक प्रतिबंधों को जारी रखने से नाराज रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने इन मुल्कों को तेल की आपूर्ति कम करने का निर्णय ले लिया। जर्मनी जो यूरोपीय देशों के पिछले कुछ दशकों से आर्थिक संकटों से अभी तक अप्रभावित था, अब रूस की रणनीति के चलते वो भी तेल की कमी के चपेट में आ गया। इसका स्वभाविक असर जर्मनी में बिजली उत्पादन पर पड़ा। वहाँ बिजली उत्पादन की लागत ही नहीं बढ़ी है, बिजली की आपूर्ति भी संकट में आ गई। आगे आने वाले समय में जब शीतकाल बहुत नजदीक है, यूरोपीय देशों के सरकारों का चिंतित होना स्वभाविक ही है। जर्मनी सरकार कह रही हैं कि यह यूरोप पर रूसी राष्ट्रपति पुतिन का आर्थिक आक्रमण है और पुतिन की यह रणनीति है कि यूरोप में कीमतें बढ़ाई जाएं, ऊर्जा असुरक्षा हो और यूरोप के देशों में फूट पड़े।

अमरीका और यूरोप के सभी अनुमान फेल हो गए हैं और पुतिन के प्रतिशोध की आंच को अब वो सह नहीं पा रहे हैं।शायद अमरीका और यूरोप को यह लगा था कि पूरी दुनिया रूस के खिलाफ खड़ी हो जाएगी और वो पुतिन को सबक सिखाने के अपने मकसद में कामयाब हो जाएँगे। लेकिन उनके सभी अनुमान गलत सिद्ध हुए। यह सही है कि भारत समेत दुनिया के मुल्क यह मानते हैं कि दुनिया में शांति पुनः स्थापित होनी चाहिए, रूस को अब इस युद्ध को बंद करना चाहिए। उनकी संवेदनाएं यूक्रेन के लोगों के साथ है, लेकिन साथ ही साथ दुनिया के मुल्क अमरीका और यूरोप के देशों द्वारा लगाए जा रहे आर्थिक प्रतिबंधों से भी सशंकित हैं। इससे पहले भी जब भारत ने 1998 में पोखरण में परमाणु विस्फोट किया था, तब भी अमरीका ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए थे। उसके बाद भी किसी भी छोटी–बड़ी बात पर अमरीका भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाने की धमकी देता रहा है। इसके अलावा अमरीका ने ईरान, वेनेजुएला समेत कई मुल्कों पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए हुए हैं, जिससे इन देशों के आर्थिक संकट और गहरा गए हैं। इन सब कारणों से अमरीका और यूरोप के साथ शेष दुनिया की कोई सहानुभूति नहीं है। ब्राज़ील के राष्ट्रपति जेर बोल्सोनरो ने कहा है कि रूस के ख़लिाफ़ आर्थिक प्रतिबंध कारगर सिद्ध नहीं हो रहे और ब्राज़ील ने अपने देश हितों को ध्यान में रखते हुए रूस के साथ अपने आर्थिक सम्बन्धों को और प्रगाढ़ करते हुए उससे उर्वरकों की ख़रीद प्रारंभ कर दी है। उधर बंगलादेश की प्रधानमंत्री शेख़ हसीना ने भी अमेरिका से आर्थिक प्रतिबंधों को वापस लेने की गुहार लगायी है। उनका कहना है कि इन आर्थिक प्रतिबंधों के कारण आम आदमी पेट्रोलियम तेल और गैस, खाद्य पदार्थ, उर्वरक और अन्य वस्तुओं की महँगाई से त्रस्त है। इसलिए ये आर्थिक प्रतिबंध मानवाधिकारों की अवहेलना कर रहे हैं।

अमरीका और यूरोपीय देश अपने प्रतिबंधों को न केवल और सख्त कर रहे हैं बल्कि दूसरे मुल्कों पर भी दबाव बना रहे हैं कि वे भी इनका हिस्सा बनें। लेकिन भारत, ब्राज़ील और अन्य देश उन्हें धत्ता दिखाते हुए रूस के साथ अपने रिश्तों को न केवल बरकरार रख रहे हैं बल्कि अधिक प्रगाढ़ भी कर रहे हैं। आज ज़रूरत इस बात की है कि अमरीका और यूरोपीय देश वास्तविकता समझें और आर्थिक प्रतिबंधों की बजाय अन्य राजनयिक प्रयासों के माध्यम से इस समस्या का समाधान खोजें। इस कड़ी में भारत और रूस के रिश्तों की गरमाहट और उनकी आपसी समझ का भी उपयोग इस युद्ध की समाप्ति हेतु किया जा सकता है।

सेना में भर्ती का 'अग्निपथ'

14 जून 2022 को घोषित 'अग्निपथ योजना', जिसमें चयन की प्रक्रिया 24 जून से प्रारंभ हुई है, युवा पुरुषों और महिलाओं, जिन्हें अग्निवीर कहा जायेगा, को एक निश्चित अवधि के लिए अधिकारियों से नीचे के रैंक हेतु सशस्त्र बलों में शामिल करने का प्रावधान है। इसके बारे में देश में काफ़ी बहस चल रही है। अग्निवीरों के लिए कुल 4 वर्षों की कार्यावधि निर्धारित की गई है, जिसमें 17.5 से 23 वर्ष की आयु के बीच के युवा, सशस्त्र बलों में अपनी सेवाएं देंगे। इस योजना से 46000 सैनिक की भर्ती भारतीय सेना, नौसेना, और वायुसेना में की जानी है। इस कार्य के लिए, उन्हें 30 से 40 हजार रुपये की मासिक परिलब्धियां हासिल होंगी। सेवानिवृत्ति के बाद 11 से 12 लाख रूपये की राशि के साथ ही, सेवा के दौरान उन्हें चिकित्सा सेवाओं के साथ–साथ उन्हें सैन्य कैंटीन का लाभ भी मिलेगा (जहाँ आवश्यक वस्तुएँ करों से मुक्त, रियायती कीमतों पर खरीद के लिए उपलब्ध होती हैं)। इनमें से 25 प्रतिशत अग्निवीर स्थायी आधार पर सेना में आगे रोजगार के लिए पात्र भी होंगे। सरकार ने इसे और आकर्षक बनाने हेतु अपनी मूल योजना में कुछ संशोधन भी किये हैं और 29 जून 2022 तक सरकार को केवल वायु अग्निवीरों के लिए ही 2 लाख आवेदन प्राप्त हुए थे। इस प्रकार से युवाओं को चार साल की निश्चित अवधि के लिए सेना में शामिल करने की प्रक्रिया आगे बढ़ने लगी है।

हालांकि, इस योजना को एक बड़े कार्यक्रम के रूप में घोषित किया गया था, इस योजना के विरोध में सरकार को बहुत मुश्किल का सामना करना पड़ा था, जहां कम से कम 12 ट्रेनों को 'उत्तेजित युवाओं' द्वारा जला दिया गया था और अन्य सार्वजनिक संपत्तियों को भी नष्ट कर दिया गया। कुछ राजनीतिक दल भी आंदोलन के माध्यम से इस योजना का विरोध कर रहे हैं और यहां तक कि उनके द्वारा शासित राज्यों की विधानसभाओं में प्रस्ताव भी पारित किया जाना प्रारम्भ भी हुआ है। चूंकि विपक्षी दलों द्वारा शासित राज्यों की संख्या बहुत कम है, ऐसे प्रस्ताव बहुत अधिक नहीं होंगे। इसके अलावा, उड़ीसा में सत्तारूढ़ बीजू जनता दल ने इस मुद्दे पर चुप रहने का विकल्प चुना है।

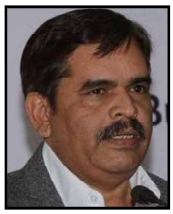

अग्निपथ योजना से राजकोष पर कम प्रभाव के साथ सेना का इष्टतम आकार प्राप्त करना संभव हो सकता है।
– डॉ. अश्वनी महाजन

ऐसा लगता है कि अब अग्निपथ योजना का विरोध ठंडा हो रहा है। और अभी तक लगभग 10 लाख युवाओं ने अग्निवीर बनने हेतु आवेदन भी किया है। इस योजना की मुख्य बातों के अलावा, राष्ट्रीय सुरक्षा की जरूरतों, वित्तीय निहितार्थ, युवाओं की रोजगार योग्यता, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में भविष्य में नौकरी के अवसर आदि के संदर्भ में इस योजना के बारे में 360 डिग्री दृष्टिकोण लेने का समय है।

सेना में रोजगार का इतिहास

हालाँकि सेना में कार्य को देशभक्ति का उत्कृष्ट प्रकार माना जाता है, फिर भी यदि संख्या के रूप में देखें तो भारतीय सेना की कुल संख्या 14 लाख है, और इसके अलावा 1.25 लाख पद खाली हैं। हालांकि सरकारों की उदासीनता सेना में बड़ी रिक्तियों को न भरने के लिए जिम्मेदार हो सकती है, लेकिन इस मुद्दे से अवगत लोगों द्वारा एक और बात रखी जाती है कि सैन्यकर्मियों के लिए कठोर शर्तों के कारण भी इन रिक्तियों को नहीं भरा जा सका। पूर्व में, सेना के अधिकारियों के पदों को भरने के लिए, कई शर्तों में ढील भी दी गई थी, और भर्ती के लिए अभियान भी चलाए गए, इसके बावजूद 9 हजार अधिकारियों के पद अभी भी खाली हैं।

वर्ष 2022–23 के बजट अनुमानों के अनुसार, भारत का रक्षा बजट 5.25 लाख करोड़ रूपये का है। इस व्यय में वेतन और पेंशन, स्थापना और प्रशासन, रक्षा उपकरणों की खरीद आदि सभी शामिल हैं। हाल ही में, सभी अच्छे इरादों के साथ, सरकार ने पिछले पांच वर्षों में लगभग 47,700 करोड़ रूपये के अतिरिक्त व्यय के साथ सभी रैंक में सेवानिवृत्त सैन्य कर्मियों की पेंशन बढ़ाने का फैसला किया गया था। यदि सभी रिक्तियों को भरा जाता है (जिसकी बहुत ही कम संभावना है), तो उस पर खर्च सरकार की बजटीय सीमा से परे

ऐसा लगता है कि अब अग्निपथ योजना का विरोध ठंडा हो रहा है। और अभी तक लगभग 10 लाख युवाओं ने अग्निवीर बनने हेतु आवेदन भी किया है।

है। हमें यह देखना होगा कि अन्य विभागों में भी, जबकि विभिन्न स्तरों पर (आमतौर पर वर्ग 3 और वर्ग 4 के स्तर पर) रिक्तियां संविदा (कॉन्ट्रेक्ट) कर्मचारियों द्वारा भरी जा रही हैं। इन कर्मचारियों के अधिकार तो न्यूनतम तो होते ही हैं, यह रोज़गार पूरी तरह से तदर्थ यानि एड–हॉक रहता है। इससे सरकारी विभागों में काम की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। हाल ही में सरकार ने अनुबंधित कर्मचारियों की तुलना में कुछ बेहतर कार्य स्थितियों के साथ निजी क्षेत्र में निश्चित अवधि के रोजगार के प्रावधान को शुरू करने के अपने इरादे की घोषणा की है। इसी तरह, सरकारी क्षेत्र के लिए भी यह योजना लाई जा सकती है, जिससे संविदात्मक रोजगार की तुलना में कर्मिकों के जीवन को बेहतर बनाने की संभावना हो सकती है।

चूंकि, सेना में मापदंड कठोर होते हैं, इसलिए इस प्रकार का संविदात्मक रोजगार कभी भी संभव नहीं रहा है। वे दिन गए, जब युद्ध मुख्य रूप से जमीन पर लड़ा जाता था। इन दिनों, युद्ध कंप्यूटर रूम में लड़े जाते हैं, तकनीकी रूप से मिसाइलों का उपयोग करते हुए, हवाई हमलों के माध्यम से कालीन बमबारी आदि युद्ध के मुख्य तरीक़े बन चुके हैं। इसलिए, उस दृष्टिकोण से, हमें सेना के इष्टतम आकार पर काम करने की आवश्यकता है। हमारी जैसी स्थिति वाले अन्य देशों पर नजर डालें, तो पाते हैं कि वे अपनी सेना का आकार छोटा करते हुए, तकनीकी युद्ध, मिसाइलों, लड़ाकू विमानों और यहां तक कि छद्म रूप से जैविक युद्ध के माध्यम से भी अपनी रणनीति बनाकर स्वयं को सैन्य रूप से अधिक मजबूत बना रहे हैं।

अग्निपथ, एक ऐसा ही प्रयास प्रतीत होता है। इस अग्निपथ योजना से राजकोष पर कम प्रभाव के साथ सेना का इष्टतम आकार प्राप्त करना संभव हो सकता है। हालांकि हमारे सशस्त्र बलों के आकार को कम करने की दिशा में नहीं, बल्कि निश्चित रूप से भविष्य में आवश्यकतानुसार देश की सेना के आकार को संतुलित करने हेतु अवसर देने का प्रयास है।

अग्निवीरों के लिए लाभ

वर्तमान में रोजगार के अवसरों की कमी के कारण, हमारे युवा या तो बिना काम के रहने को मजबूर हैं, अथवा बिना स्पष्ट सोच या लक्ष्य के शिक्षा संस्थानों में दाखिला ले लेते हैं। लंबे समय तक बेरोजगार रहकर भी वे रोज़गार योग्य नहीं बन पाते हैं, जो न तो उनके लिए अच्छा है और न ही समाज के लिए। पूर्व में भी सेना में कई पदों की सेवा अवधि 10 वर्ष से 20 वर्ष के बीच होती रही है और उसके बाद ये 'सेवानिवृत्त' पूर्व सैनिक न केवल रोजगार योग्य रहते हैं, बल्कि अपने प्रशिक्षण, अनुशासन कार्य और कार्य संस्कृति और कड़ी मेहनत, जो वे सशस्त्र बलों में रह कर सीखते हैं, के कारण कॉर्पोरेट और अन्य निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में भी माँग में रहते हैं। सिवाय इस तथ्य के कि सेवा अवधि को घटाकर 4 वर्ष कर दिया गया है, सेवा के दौरान, अन्य सभी लाभ, जो अन्य सैनिकों प्राप्त होंगे, वही उन्हें भी प्राप्त होंगे। अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद, उन्हें अन्य समकक्ष युवकों पर बढ़त हासिल होगी, जो सेना में अग्निवीर के रूप में शामिल नहीं हो पाएँगे। शायद यही कारण है कि कई युवा इस योजना की ओर आकर्षित हुए हैं और उन्होंने इस योजना में आवेदन किया है। ❑❑

अग्निपथ योजना को समझने की जरुरत

भारत की केन्द्र सरकार ने 14 जून 2022 को सेवा में भर्ती करने के लिए अग्निपथ योजना घोषित की। घोषणा के दो तीन बाद से ही बिहार राज्य व उसके आस–पास के क्षेत्रों में युवाओं ने योजना का विरोध अग्निपथ योजना को बिना समझे ही शुरु कर दिया। प्रतीत होता था कि यह विरोध विशुद्ध रुप से विभिन्न विरेाधी राजनीतिक दलों के द्वारा प्रायोजित था क्योंकि जैसे ही अग्निपथ योजना में भर्ती के लिए पंजीकरण की प्रक्रिया शुरु हुई वैसे ही लाखों युवाओं ने वायु, जल व सेना में पंजीकरण कराना शुरू कर दिया। अग्निपथ योजना को आशातीत सफलता दिखाई देने लगी है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने तीनों सेनाओं में भर्ती के लिए केन्द्र सरकार के द्वारा घोषित अग्निपथ योजना पर 25 जून 2022 को अपना विरोध तेज करने की घोषणा कर दी। कांग्रेस का मानना है कि योजना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए घातक है। कांग्रेस अग्निपथ योजना के विरोध में एक राजनीतिक अभियान चलाना चाहती है। इस योजना को लेकर कांग्रेस अपना दृष्टिकोण जनता तक पंहुचायेगी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी इस योजना को ठेका प्रथा की तरह बताते है तथा कृषि कानूनों की तरह ही सरकार को अग्निपथ योजना को भी वापस लेने की मांग कर रहा है। कांग्रेस इस योजना का विरोध संचार के प्रत्येक माध्यमों पर करने की योजना बना रही है।

राष्ट्रीय लोकदल ने भी अग्निपथ योजना का विरोध के लिए आंदोलन करने की रुप रेखा बना रही है। रालोद का मानना है यह योजना युवाओं के साथ एक मजाक है। 3 जुलाई 2022 को जयन्त चौधरी मुजफ्फरनगर के शाहपुर कस्बे में युवा पंचायत को सबोधित करते हुए है कहा कि सीमा पर देश की रक्षा करने वाला सैनिक 3 साल की कड़ी मेहनत के बाद तैयार किया जाता है। अग्निपथ योजना को कटघरे में रखते हुए उन्होनें कहा कि 6 महीने की ट्रेनिंग मे अग्निवीर नहीं अपितु अभिमन्युओं को पैदा करेगी जिसको चक्रव्यूह में फंसा कर दुश्मन मिल कर व घेर कर मार डालेंगे। सेना मरने के लिए नहीं होती है अपतिू मारने के लिए होती है। राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राज्य सभा सदस्य जयंत चौधरी ने

सेना में भारत के हितों की सर्वोच्चता व आधुनिकता ही दिखाई दी जानी चाहिए जो अग्निपथ योजना में निहित है।

– डॉ. सूर्यप्रकाश अग्रवाल

कहा है कि अग्निपथ योजना के जरिये सरकार किसान आंदोलन का बदला ले रही है। सरकार ने युवाओं को आग में झोंकने का काम किया है तभी इसका नाम अग्निपथ योजना रखा गया है। रालोद के दो विधायकों ने कहा कि अग्निपथ योजना के विरोध में वे अपनी विधायक पैंशन ग्रहण नहीं करेंगे क्योंकि सरकार भी चार साल की भर्ती में युवाओं को पेंशन नहीं देगी।

मेघालय राज्य के राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने बागपत के खेकडा में अपने मित्र गजे सिंह दहाया के निवास पर 24 जून 2022 को पत्रकारों को बताया कि नई भर्ती योजना अग्निपथ योजना जवानों के खिलाफ है। युवाओं की उम्मीदों के साथ घोखा है। उनका कहना था कि छह माह जवान ट्रेनिंग करेगा, छह माह की छुटटी, तीन साल की नौकरी करने के बाद जब जवान घर वापस लौटेगा तो उसका ब्याह ही नहीं हो पायेगा। बिहार विधान सभा में 27 जून 2022 को दोनों सदनों ने विपक्ष ने इस योजना का जोरदार विरोध किया। पंजाब की भंगवत सिंह मान की सरकार इस अग्निपथ योजना का विरोध करने के लिए राज्य विधान में प्रस्ताव पारित करवा रही है। इसको विधान सभा का दुरुपयोग ही कहा जा सकता है तथा राज्य सरकार की ओर से अपने अधिकारों का अतिक्रमण भी। पंजाब में कांग्रेस भी

विश्व में बहुत से देश ऐसे है जिन्होंने अग्निपथ जैसी योजनाओं का बहुत पहले ही लागू कर दिया था।

आम आदमी पार्टी की सरकार का समर्थन कर रही है। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी अग्निपथ योजना को भाजपा का घोटाला बता रही है। ममता बनर्जी ने एक विचित्र मांग करते हुए कहा कि अग्निवीरों की सेवानिवृति की आुय 65 वर्ष की जानी चाहिए। यह ममता बनर्जी की अपरिपक्व सोच तथा इस गम्भीर अग्निपथ योजना के प्रति अपनी अगम्भीरता ही दिखा रही है।

अराजनीतिक अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष योगेन्द्र का कहना है कि अग्निपथ योजना देश के नौजवानों के लिए एक वरदान है। इस योजना से अधिसंख्य युवाओं को सेना में भर्ती होकर देश की सेवा करके के लिए अवसर प्राप्त हो सकेगा।

अग्निपथ योजना का विरोध राजनीतिक है तथा बिना सोचे समझे व दूरगामी परिणाम की ओर न सोच कर विरोध किया जा रहा है। सेना में भर्ती के प्रति युवाओं के उत्साह से यह सिद्ध होता है कि विरोध जानबूझ कर किया जा रहा है। संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों को आवश्यकता से अधिक और देश के हित से भी ज्यादा महत्व दिया जा रहा है। अतार्किक रवैया अपना कर अन्य राजनीतिक दलों के द्वारा विरोध किया जा रहा है। अब इस योजना के विरोध में किसान संगठन भी शामिल हो रहे है और युवाओं को सही मार्ग नहीं दिख रहे है। केन्द्र सरकार के प्रत्येक फैसले के विरोध की ताक में रहने वाले आंदोलनजीवी भी आग में घी डालने की कोशिश कर रहे हैं।

विरोध करने वाले राजनीतिक दल व किसान संगठन यह सोच नहीं सके है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेनाओं में क्या परिवर्तन लाये जा रहे है तथा बदलते परिवेश में सेनाओं की क्या जरुरतें है। विश्व में बहुत से देश ऐसे है जिन्होंने अग्निपथ जैसी योजनाओं का बहुत पहले ही लागू कर दिया था। आगे आने वाले समय में युद्ध मिसाइल, ड्रोन व कृत्रिम बुद्धिमता के द्वारा लड़े जायेंगे। वर्तमान सेना की संरचना व युद्ध करने का ढंग एकदम से बदलने वाला है। समय परिवर्तन के साथ अन्य संगठनों की तरह सेना में भी सभी तौर–तरीकों में संशोधन किये जा सकेंगे। सेना में भारत के हितों की सर्वोच्चता व आधुनिकता ही दिखाई दी जानी चाहिए जो अग्निपथ योजना में निहित है। ❑❑

डॉ. सूर्य प्रकाश अग्रवाल सनातन धर्म महाविद्यालय मुजफ्फरनगर 251001 (उ.प्र.), के वाणिज्य संकाय के संकायाध्यक्ष व ऐसोसियेट प्रोफेसर के पद से व महाविद्यालय के प्राचार्य पद से अवकाश प्राप्त हैं तथा स्वतंत्र लेखक व टिप्पणीकार है।

:: सूचना ::

स्वदेशी पत्रिका आर्थिक सम्राज्यवाद के खिलाफ एक सशक्त आवाज है। पत्रिका को ऐसे लोगों से प्रतिक्रियाएं, रिपोर्ट या आलेख की अपेक्षा है जो राष्ट्रहित में सोचते हैं और देश के स्वावलम्बन के लिए कुछ करने की इच्छा रखते है। जरूरी नहीं कि आप पत्रकार या लेखक ही हों, अपने आसपास से जुड़ी चीजों के प्रति आपकी संवदेना है और आप शब्दों में उसे लिख सकते है तो हमें अवश्य लिख भेजें। साथ ही स्वदेशी पत्रिका में छपे लेख आपको कैसे लगते हैं, क्या आप इसमें कुछ नए विषयों का समायोजन चाहते हैं कृपया हमें अवश्य अवगत कराएं। आपके विचारों को हम प्राथमिकता के साथ प्रकाशित करने का भी प्रयास करेंगे।

संपादक, स्वदेशी पत्रिका

'धर्मक्षेत्र', सेक्टर–8, बाबू गेनू मार्ग, रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022

पश्चिमी देशों का प्रपंच है पर्यावरण रैंकिंग

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने लिखा है कि 'जिस तरह लोगों को धूल, धूप, धुआं, गर्मी और गरीबी भूले से भी रास नहीं आती, ठीक वैसे ही अमीर मुल्कों को गरीब मुल्कों की तरक्की फूटी आंख नहीं सुहाती।' भारत के गोर्की कहे जाने वाले प्रेमचन्द की उक्त उक्ति का संदर्भ भले ही अलहदा था, पर पर्यावरण की रैंकिंग को लेकर अमीर विकसित पश्चिमी मुल्कों का नजरिया अफ्रीकी, एशियाई, गरीब और विकासशील देशों के प्रति कुछ इसी तरह का है। मनमाने मानकों के आधार पर तैयार की गई हालिया अमेरिकी रिपोर्ट इसकी पुष्टि करती है।

गत दिनों आए एनवायरनमेंट परफारमेंस इंडेक्स में दुनिया भर के 180 देशों में से भारत को 180वें स्थान पर रखा गया है। अमेरिका की येल और कोलंबिया यूनिवर्सिटी की ओर से जारी इस रैंकिंग को लेकर काफी हंगामा भी हुआ है। भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय ने इस रैंकिंग को अवैधानिक बताया है, वहीं कई शोध संस्थाओं का कहना है कि इसमें बहुत सारी खामियां है। इसकी गहराई में जाने पर पता चलता है कि इसकी जो आलोचनाएं हो रही है, वह बिल्कुल सही है।

अमेरिका के दो विश्वविद्यालयों द्वारा की गई रैंकिंग को दुनिया के कई देशों ने नजरअंदाज किया है। चीन को इस रैंकिंग में 160वें नंबर पर रखा गया है, लेकिन चीन ने इसे पूरी तरह से अनदेखा कर दिया है। 164वें स्थान पर इंडोनेशिया है। वहां की सरकार ने भी अब तक इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। सिर्फ भारत में ही इस रैंकिंग को लेकर बहुत चिंता जताई जा रही है। इसकी वजह क्या है? यह अपने आपमें एक पड़ताल का विषय है। मेरी अपनी राय है कि आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी लगता है हम औपनिवेशिक सोच से अभी पूरी तरह बाहर नहीं निकल पाए हैं, वरना हम यूरोप और अमेरिका की किसी भी रैंकिंग को इस तरह से तवज्जो नहीं देते। यह हमारे असुरक्षा के भाव को दिखाता है। हमारे मन के भीतर कहीं न कहीं अभी भी यह बात छिपी हुई है कि यूरोप और अमेरिका हमारी समय–समय पर बड़ाई करें। इसी कारण हम चाहते हैं कि उन विकसित देशों के छोटे इंस्टिट्यूशन भी समय–समय पर अगर हमें शाबाशी देते हैं, हमारी पीठ ठोकते हैं, तो हम और हमारे शासक अपने आपको धन्य मानते हैं तथा उस शाबाशी का ढ़िढौरा हम दुनिया भर में पीटते हैं। लेकिन ठीक इसके उलट वहां के जब कोई छोटे से भी संस्थान हमारी बुराई करते हैं तो हम खाद, पानी लेकर उसके खिलाफ बोलने लगते हैं। यहां सवाल केवल हमारे दायित्व बोध का ही नहीं, बल्कि हमारी मानसिकता का भी खड़ा होता है। यह जानते हुए भी कि वे विकसित देश हमें तभी मान्यता देंगे जब हम उनकी बात को आंख मूंदकर मानेंगे और जैसा वह कहेंगे उसी तरह सोचेंगे। अगर यह नहीं होगा तो वह हमें कभी भी अच्छी रैंकिंग नहीं दे सकते।

ईपीआई का एक फार्मूला है कि अगर आपका देश अमीर है, अगर आपकी जनसंख्या कम है, अगर आपका देश छोटा है, तो आपको अच्छा कहेगा। अगर आपका देश गरीब है,

आजादी के 75वें साल यानि कि अमृत काल में भी अगर हम विदेशियों के गढ़े सांचे में खुद को फिट करने की कोशिश करेंगे तो वे कभी भी हमें वह मान नहीं देंगे, जिसके हम वास्तव में हकदार है।

– अनिल तिवारी

अगर आपकी जनसंख्या अधिक है, अगर आपके देश का आकार बड़ा है, तो वह हर हाल में खराब ही कहेगा। रिपोर्ट को सरसरी नजर से देखने पर भी यह तथ्य अपने आप बाहर निकल आता है कि ईपीआई रैंकिंग में यूरोप के छोटे–छोटे देशों को टॉप पर रखा है। अबकी बार दोनों विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित सूची में डेनमार्क, ब्रिटेन, फिनलैंड, माल्टा और स्वीडन टॉप पर हैं। वहीं खराब देशों की सूची में बड़ी आबादी वाले एशिया और अफ्रीका के बड़े देश हैं। क्या ऐसी रैंकिंग उचित है? आज की तारीख में पर्यावरण की जो चुनौतियां भारत या चीन में है, क्या वही माल्टा या फिनलैंड जैसे देशों में नहीं है। दिल्ली में किसी एक कॉलोनी की जनसंख्या माल्टा से ज्यादा है। फिनलैंड की जनसंख्या हमारे छोटे–छोटे जिलों के बराबर है, तो क्या भारत या चीन जैसे उप महाद्वीपों को माल्टा, फिनलैंड, डेनमार्क और ब्रिटेन से आप रैंक कर सकते हैं। इसका जवाब है कि 'हां' आप रैंक कर सकते हैं, लेकिन उस रैंकिंग के लिए आपको एक बहुत ही सटीक वैज्ञानिक तरीके का प्रयोग करने की जरूरत होगी। दुर्भाग्य से वह सटीक वैज्ञानिक तरीका विकसित देशों द्वारा दी जाने वाली इस तरह की रैंकिंग में प्रयोग नहीं होता है।

ईपीआई ने अपने अध्ययन में गलत मानकों का प्रयोग किया। जलवायु परिवर्तन के हिस्सों को मनमाफिक दर्ज किया है। जलवायु परिवर्तन की रैंकिंग को भी ग्रोथ रेट के आधार पर निकाला है। ज्यादा ग्रोथ रेट पर कम नंबर दिया, वहीं पर कैपिटा कार्बन उत्सर्जन का मान भी कम कर दिया। यही नहीं उपभोग और कचरे के इंडिकेटर का तो उसने प्रयोग ही नहीं किया।

इस तरह की रैंकिंग से दुनिया भर के अविकसित या विकासशील देश हमेशा पिछडे ही रहेंगे, क्योंकि उनकी शुरुआत ही बहुत कम अंकों से होती है। वहीं विकसित देशों में कार्बन उत्सर्जन की स्थिति भले ही एकदम उच्च स्तर पर हो, लेकिन उनका ग्रोथ रेट कम होगा। विकसित और विकासशील देशों का उत्सर्जन कम होने पर भी इनका ग्रोथ रेट ज्यादा हो जाएगा। इस तरह के अनेक ऐसे मानक उन लोगों द्वारा तैयार किए गए हैं जो केवल उन्हीं अमीर देशों को फायदा पहुंचाने के लिए बनाए गए हैं। पर्यावरण की रैंकिंग के लिए पश्चिम के देशों ने षडयंत्रपूर्वक इस खेल को रचा है। उनकी एक ही मंशा है कि दुनिया भर के गरीब और अविकसित देशों को अपना पिछलग्गू बनाए रखना।

ईपीआई के शीर्ष पांच देशों का कार्बन और कचरा बनाम भारत

क्र.	देश	कार्बन उत्सर्जन	कचरा
1.	डेनमार्क	0.85	5.8
2.	ब्रिटेन	0.46	5.4
3.	फिनलैंड	0.57	8.0
4.	माल्टा	0.69	3.2
5.	स्वीडन	0.45	4.2
	भारत	**0.09**	**1.8**

स्रोतः फोरेस्ट डिपार्टमेंट

इसमें कोई दो राय नहीं कि दुनिया की तरह भारत में भी पर्यावरण की समस्या है, लेकिन भारत में पर्यावरण की समस्या दुनिया की सबसे ज्यादा बड़ी है, यह कहना न्यायोचित नहीं है। ऐसे में ईपीआई के आकलन की आलोचना अवश्य होनी चाहिए। लेकिन भारत के पर्यावरण के बारे में यहां के वैज्ञानिकों की जो राय है उसे नजरअंदाज करना घातक होगा। आज पानी से लेकर वायु प्रदूषण, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट, जलवायु परिवर्तन, जंगलों का विनाश जैसे किसी भी इंडिकेटर को देखा जाए तो पता चलता है कि भारत में भी स्थिति संतोषजनक नहीं है।

ऐसा नहीं है कि भारत में पर्यावरण की सुरक्षा पर काम नहीं हो रहा है, यहां अक्षय ऊर्जा सिस्टम पर तेजी से काम चल रहा है, अभी–अभी 1 जुलाई 2022 से हमने सिंगल यूज प्लास्टिक की 19 चीजों को बैन कर दिया है। स्वच्छ भारत मिशन पहले से ही चलाया जा रहा है। इन सबके बावजूद जो पर्यावरण के मुद्दे हैं और जो समस्याएं हैं उनके बाबत अभी और भी काम किया जाना चाहिए। इसलिए अब समय आ गया है कि हम अपना खुद आकलन करें, हम अपनी खुद की रैंकिंग करें, ताकि हम अपने देश की तरक्की खुद से कर सके और हर साल देख सके कि पर्यावरण के मुद्दे पर हम कितना आगे बढ़े या तय मानक से पीछे हटे। हमारे देश में बहुत सी ऐसी संस्थाएं हैं, जो यह काम कर सकती है। खुद नीति आयोग यह कर सकता है। जिससे हम राज्यों को रैंक करते हुए देख सकते हैं कि कौन सा राज्य पर्यावरण के मामले में कितना आगे है और कौन सा राज्य कितना पीछे हैं। फिर इस प्रतिस्पर्धा के साथ हम राज्यों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी कर सकते हैं।

वर्तमान में बिगड़ता प्राकृतिक संतुलन निर्विवाद रूप से मानव इतिहास की सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। मानव जनित जलवायु परिवर्तन जैव विविधता का क्षय, मरुस्थलीकरण, जलवायु और प्रवाह, रसायनिक प्रदूषण, मिट्टी का क्षरण, जंगल का विनाश, आदि

का प्रभाव अब वैश्विक परिस्थितिकी तंत्र जो धरा पर जीवन के संग कई स्वरूपों में, जिसमें मानव जीवन भी शामिल है, का मूल है कि अमित असंतुलन के रूप में सामने आ रहा है। प्रकृति के संचरण की विकराल होती समस्या की सुगबुगाहट हालांकि पिछली सदी से ही शुरू हो गई थी और विज्ञान की सटीक व्याख्या के आधार पर जलवायु परिवर्तन सहित तमाम पर्यावरणीय मुद्दों को लगभग वैश्विक स्तर पर आधी सदी पहले ही उठाया गया था, पर इस दिशा में किए गए सारे प्रयास अब तक नाकाफी साबित हुए हैं।

हम पर्यावरण रक्षा के लिए स्वदेशी तकनीक का अधिकाधिक प्रयोग करें। साथ ही साथ भौतिक दुनिया की चकाचौंध और विकसित देशों की नकल की आदत से दूर रहते हुए अपने विकास और विकास से संबंधित आंकड़ों और बड़े पैमाने पर रैंकिंग की पद्धति विकसित करें। भारत के डिजीटल मानकों का दुनिया ने लोहा मान लिया है।

पृथ्वी की उत्पत्ति से अब तक के 4.6 बिलियन सालों का जलवायु और पर्यावरण का इतिहास काफी उतार–चढ़ाव वाला रहा है, पर आखिरी हिमयुग के बाद से लगभग संतुलन की स्थिति रही जो पिछले 200 सालों में खासकर पिछले 5 दशकों में अभूतपूर्व से रूप से असंतुलित होकर मानव जीवन के अस्तित्व के संकट का रूप ले चुकी है। पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति 3.8 बिलीयन वर्ष पहले के साथ पर्यावरणीय घटकों और जीवन की मूलभूत प्रक्रिया एक दूसरे को प्रभावित करते हुए वर्तमान स्वरूप तक पहुंची है। पृथ्वी की उत्पत्ति के समय की संरचना प्रक्रिया काफी उम्र थी, पर घटक काफी सरल थे। प्रारंभ में केवल 12 मिनिरल्स रहे थे। जीवन की उत्पत्ति भी आप सीजन के बिना हुई, फिर एक कोशीय प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया से पहली बार ऑक्सीजन बनने लगी जो सबसे पहले अथाह समुद्र में धुली और धीरे–धीरे पृथ्वी की मूल संरचना को संतुलित करने लगी जिससे कि मिनिरलों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई और आज लगभग तिरालिस सौ मिनरल्स मौजूद हैं प्रकाश संश्लेषण वाले एक कोशीय जीवन की प्रचुरता ने वायुमंडल को भी ऑक्सीजन से संतृप्त कर दिया और 600 मिलीयन साल पहले ओजोन की परत बननी शुरू हुई जिसके कारण समुद्र से ईतर जमीन का वातावरण जीवन के अनुकूल ठंडा हुआ इसके बाद शुरू हुई जीवन की विविधता का दौर और इसमें मानव का स्वरूप सबसे ऊंचे आसन पर विराजमान हुआ। जीवन की उत्पत्ति से अब तक प्रकृति के घटकों और असंख्य जीवो के बीच के आपसी अंतर संबंधों का एक गुण परंतु गतिशील संतुलन का जाल बनता रहा जो बदलती परिस्थितियों में भी निरंतर अनुकूल और अनुकरणीय रहा है, जिसमें हर एक घटक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एक–दूसरे को प्रभावित करता रहा है। विकास के क्रम में मनुष्य ने ही मशीनों को बढ़ावा दिया औद्योगिकरण, उपभोक्तावाद के बाद वैश्वीकरण की लहर आई, जिसका असर दुनिया के हर भौगोलिक बसावट में दिखा। मुनाफे की अंधी दौड़ के पीछे फिर अचानक से केवल तकनीक आधारित उत्पादन और उपभोग का दौरा आ गया। जिसके मूल में बाजारवाद और मुनाफा आधारित विकासवाद का झंडा ऊंचा था। लेकिन जब तक हम सह पाते मुनाफा आधारित आर्थिक विकास बेतहाशा बढ़ती जनसंख्या भोक्ता बाद वैश्वीकरण और सूचना क्रांति पर सवार होकर कब प्राकृतिक घटकों के अंतर संबंधों के गूढ़ अंतरजाल को तोड़ जलवायु परिस्थितिकी की तबाही आ पहुंची हमें पता ही नहीं चला। अब तो हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए धरती भी छोटी पड़ने लगी है।

समाधान केवल तकनीकी से नहीं हो सकता जब तक हम सामाजिक व्यवहार और व्यक्तिगत आचरण को नहीं जोड़ेंगे तब तक प्रकृति के आधार को हम ठीक नहीं कर पाएंगे प्लास्टिक उपयोग की लत समुद्र की सांसे रोक रही है यहां तक कि समुद्री नमक में भी मिलकर वह खाने के साथ हर आदमी के पेट में जा रही है भारत सरकार ने प्लास्टिक पर बैन लगा कर एक उम्दा काम किया है अब जरूरत है कि समाज इसके लिए आगे बढ़े तथा सुरक्षा से ऐसे जहरीली चीजों का परित्याग करें।

हम पर्यावरण रक्षा के लिए स्वदेशी तकनीक का अधिकाधिक प्रयोग करें। साथ ही साथ भौतिक दुनिया की चकाचौंध और विकसित देशों की नकल की आदत से दूर रहते हुए अपने विकास और विकास से संबंधित आंकड़ों और बड़े पैमाने पर रैंकिंग की पद्धति विकसित करें। भारत के डिजीटल मानकों का दुनिया ने लोहा मान लिया है। अब अगर विभिन्न क्षेत्रों की रैंकिंग चाहे वो शिक्षा की हो, चिकित्सा की हो, पर्यावरण की हो, हमें अपनी तासीर के मुताबिक मानक तय करने होंगे। आजादी के 75वें साल यानि कि अमृत काल में भी अगर हम विदेशियों के गढ़े सांचे में खुद को फिट करने की कोशिश करेंगे तो वे कभी भी हमें वह मान नहीं देंगे, जिसके हम वास्तव में हकदार है। ❑❑

कायदा–कानून से ही लोकतंत्र को मिलती है मजबूती

लोकतंत्र की व्यवस्था में कायदा–कानून मुख्य होता है और कायदा न मानने वाले जब बढ़ जाते है या संरक्षित हो जाते है, तो लोकतंत्र भी खतरे में पड़ जाता है। राजस्थान में हुई अमानुष धार्मिक हत्या इस ओर ध्यान देने को मजबूर करती है और सोचने पर विवश करती है कि भारत में एक ऐसी विचारधारा प्रसारित हो रही है जो किसी कानूनी व्यवस्था और किसी भी लोकतांत्रिक सह–जीवन में विश्वास नहीं करती। उससे भी दुःखद यह है कि ऐसी चरम और आतंकी विचारधारा को पनपने भी दिया जा रहा है। श्रीमती नूपुर शर्मा के केस में सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी तो इस संदर्भ में विचलित करने वाली कही जाएगी, जो इस आतंकी विचारधारा को स्वीकार करती नजर आ रही है। यह जरूर है कि इस आतंकी विचारधारा को स्वीकारने एवं उसके प्रसार में सहायक सत्ता की राजनीति और छद्मी कही जानी वाली भारतीय सेकुलर विचार–व्यवस्था रही है। समय रहते ऐसी चरम और आतंक को पनाह देने वाली विचारधारा एवं व्यवस्था को खत्म नहीं किया गया तो भारतीय लोकतंत्र के बचने की उम्मीद कम ही कही जाएगी।

चरमपंथी विचारधारा को पनपने देना खतरनाक

वैसे तो भारतीय संस्कृति अपने दार्शनिक विचार से लोकतांत्रिक और सर्व धर्म के प्रति सम–भाव मानने वाली है और भारतीय अपने प्रवृत्ति से ही सामंजस्य, सहनशील और एकात्म सामाजिक सह–जीवन में विश्वास करने वाला है। यह भी विदित है कि भारत बाहरी आक्रांताओं से जूझता आया है और उनके जुल्म का शिकार भी हुआ है। इतिहास गवाह है की बाहरी आक्रांताओं की सिर्फ विचारधारा अलग नहीं थी, उनमें अपने धर्म के प्रसार की मंशा और दूसरों पर ज़ोर जबरदस्ती अपने विचार थोपने की वृति भी थी जिसके चलते यहाँ का सामाजिक जीवन विचलित हुआ। स्वतंत्रता के बाद भी हिन्दू के सहनशील और क्षमाशील होने का गलत अर्थ लिया गया और उसे कमजोर समझकर अपमानित किया गया। उसका नतीजा यह है कि यहाँ के मुस्लिम समुदाय का एक हिस्सा हमेशा अपनी बात मनवाता रहा और चरमपंथी विचारधारा को अपनाता रहा तथा अन्य धर्म के लोगों के साथ सामाजिक सह–जीवन नकारता रहा। पाकिस्तान का निर्माण इसमें काफी हद तक ज़िम्मेवार ठहराया

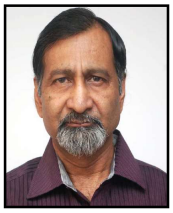

समय रहते ही चरमपंथी विचारधारा और आतंकवादी मानसिकता को समाप्त करना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। यही मानवतावाद के लिए उपयुक्त होगा और यही लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।

– अनिल जवलेकर

किसी धर्म को अन्यों के साथ सह जीवन नकारने तथा उन पर अपने विचार थोपने नहीं देना चाहिए। इसके लिए जो भी व्यवस्था आवश्यक हो उसे अमल में लाना चाहिए।

जा सकता है जो आए दिन यहाँ के मुस्लिमों को भड़काने और भारत में आतंकवाद फैलाने की कोशिश करता रहता है। आज ऐसी आतंकवादी शक्तियां अपना असर दिखाती नजर आ रही है जो आने वाले समय में राष्ट्रीय एकात्मता को खतरा पहुंचा सकती है।

चुनावी राजनीति मुख्य कारण

भारतीय लोकतंत्र सिर्फ चुनाव तक सीमित होने देना इसका बहुत बड़ा कारण कहा जा सकता है जिसके चलते वोटों की राजनीति हावी है और जब तक भारतीय लोकतंत्र चुनाव प्रक्रिया को सुधार नहीं लेता, तब तक यहां की राजनीति चरमपंथी विचारधारा को पनाह देती रहेगी। इसलिए यह जरूरी है कि चुनाव में किसी भी चुनाव क्षेत्र में किसी एक जाति या समुदाय विशेष का महत्व कम किया जाए। यह सभी जानते है कि चुनाव में विशेष समुदाय अपने इकट्ठा मतों से हिस्सा लेते है और चुनाव परिणामों पर असर करते दिखते है, इसलिए उनका चुनाव राजनीति में प्रभाव रहता है। चुनाव के लिए ऐसे समुदाय का प्रभाव कम किया जाना आवश्यक है। जरूरी है की आज के चुनाव क्षेत्र की रचना और व्याख्या बदली जाए। चुनाव क्षेत्र का आज का भौगोलिक आधार बदल कर जनसंख्या का आधार दे कर इसे सुलझाया जा सकता है। एक प्रांत को आधार मानकर प्रतिनिधित्व की संख्या तय करनी होगी और उस संख्या के तहत आभासी चुनाव क्षेत्र तैयार किया जा सकता है, जिसमें किसी एक जाति या समुदाय का मतदान में प्रभाव कम हो। छोटे–छोटे चुनाव क्षेत्र करने पर यह आसान हो सकता है। आज के भौगोलिक चुनाव क्षेत्र का पर्याय ढूंढना जरूरी है, यह समझने से बात स्पष्ट होगी।

कानून स्पष्ट हो

आज का कानून भावना भड़काने वाले भाष्य के संदर्भ में संदिग्ध है। इसलिए यह जरूरी है कि इसे स्पष्ट किया जाये और सभी प्रकार के भाष्य जो हिंसा की बात करते है या किसी धार्मिक भावना या धार्मिक संज्ञा, प्रतीकों एवं धर्म ग्रंथों को अपमानित करने जैसी बात करते है, उसे स्पष्ट रूप से कानून के दायरे में लाया जाये और कड़ी सजा का प्रावधान किया जाये। उसी तरह इस विषय में कानूनी प्रक्रिया भी सीधी और सरल होनी चाहिए। जहाँ प्रमाण स्पष्ट हो, उसे कानूनी प्रक्रिया में न उलझने दिया जाये। इस कानून के दायरे में व्यक्त होने के लिए उपलब्ध आज के सभी माध्यमों को लाना भी जरूरी है। सार्वजनिक तौर पर कही जाने वाली हर बात इसमें शामिल होना जरूरी है और इस सार्वजनिकता की व्याख्या भी विस्तारित होनी चाहिए जिसमें सर्व प्रकार के सार्वजनिक मंच, जिसमें राजकीय मंच भी आता है, मंदिर–मस्जिद या स्कूल, मदरसा, कॉलेज में पढ़ाई या इस संदर्भ में आयोजित समारंभ के वक्त कही जाने वाली हिंसा तथा नफरत फैलाने वाली या उसका प्रचार–प्रसार करने वाली बाते भी शामिल हो।

इस विषय को नजर अंदाज करना गलत होगा

यहाँ पर लोकतंत्र की व्यवस्था भी समझ लेना जरूरी है। यह व्यवस्था सभी वर्ग को शांति से सह–जीवन जीने के साथ–साथ अपना व्यक्तिगत न्यायपूर्ण विकास साधने की बात करती है। प्रतिनिधित्व के साथ–साथ यह व्यवस्था समान संधि तथा सभी के लिए एक कानून की भी बात करती है। इसलिए यह व्यवस्था किसी को अपनी ही बात का आग्रह करने तथा उसको मनवाने के लिए ज़ोर जबरदस्ती करने की इजाजत नहीं देती। सभी व्यक्ति तथा समुदाय को इस मर्यादा का पालन करना आवश्यक है। इसलिए लोकतंत्र में किसी को किसी प्रकार के चरम और आतंकवादी विचारधारा को अपनाने की या उसे पनाह देने की इजाजत नहीं दी जा सकती। इस बात को नजर अंदाज करना लोकतंत्र के लिए खतरनाक होगा इसमें कोई संदेह नहीं।

राष्ट्रीय एकात्मता के प्रयास जरूरी

भारतीय समाज की विविध स्तर पर एकात्मता और सभी भारतीय समुदायों में राष्ट्रवाद की समान इच्छा का निर्माण करना जरूरी है और उसके लिए जरूरी है कि सभी को एक कायदा सभी दृष्टि से लागू होना तथा सभी के लिए एक ही शिक्षण पद्धति होना। धर्म तत्व ज्ञान की चर्चा वैचारिक स्तर पर हो सकती है लेकिन धर्म पालन की छूट जीवन को व्यक्तिगत स्तर पर आध्यात्मिक उँचाई तक ले जाने तथा व्यवहार में सभी धर्मियों के साथ सह–जीवन बिताने के लिए मार्गदर्शक हो इतनी ही होनी चाहिए। किसी धर्म को अन्यों के साथ सह जीवन नकारने तथा उन पर अपने विचार थोपने नहीं देना चाहिए। इसके लिए जो भी व्यवस्था आवश्यक हो उसे अमल में लाना चाहिए। समय रहते ही चरमपंथी विचारधारा और आतंकवादी मानसिकता को समाप्त करना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। यही मानवतावाद के लिए उपयुक्त होगा और यही लोकतंत्र के लिए आवश्यक है। ❑❑

चीन के कर्ज का मकड़जाल

श्रीलंका ने खुद दी आफत को दावत

चीन के कर्ज जाल में फंसा श्रीलंका अपने इतिहास के सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। आर्थिक संकट के चलते वहां की जनता बेहाल है। प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री आवास पर अपना कब्जा जमा रखा है और उन लोगों की मांग है कि जब तक सत्ता में बैठे लोग इस्तीफा नहीं दे देते, तब तक वह वहां से जाने वाले नहीं हैं। सोशल मीडिया पर प्रदर्शनकारियों के कई तरह के वीडियो वायरल हो रहे हैं। जिसमें सहज देखा जा सकता है कि राष्ट्रपति भवन में किस प्रकार से प्रदर्शनकारी शाही दावत का लुफ्त उठा रहे हैं।

पड़ोसी देश श्रीलंका कंगाली की कगार पर पहुंच गया है। महंगाई आसमान छू रही है। पूरे देश में बिजली का उत्पादन बंद है। बिजली की कमी से हालात इस तरह खराब हो गए हैं कि अस्पतालों में आवश्यक सर्जरी चेक नहीं हो पा रही है। कारखानों में कामकाज बंद है। कागज की किल्लत के कारण कई परीक्षाएं रद्द कर दी गई है। तेल की कमी से रेल और बस यातायात लगभग बंद हो चुका है। आपूर्ति व्यवस्था बंद होने से घरों के चूल्हे बंद हो गए। लोगों को खाने पीने की चीजें नहीं मिल पा रही है। देश की शहादत के लिए जनता सरकार को ही दोषी मान रही है।

चीन के कर्ज में फंसे श्रीलंका की हालत दिन प्रतिदिन बदतर होती जा रही है। पूरे देश में खाद्य सामग्री का संकट इतना गहरा हो गया कि जनता के लिए पेट भरना मुश्किल हो गया है। गौरतलब है कि चीन सहित अनेक देशों के कर्ज तले दबा श्रीलंका दिवालिया होने के कगार पर पहुंच गया है। उसका विदेशी मुद्रा भंडार खत्म हो चुका है। इस कमी के कारण देश में ज्यादातर सामान सहित दवाइयां, पेट्रोल, डीजल आदि का विदेशों से आयात नहीं हो पा रहा है। महंगाई की मार से जनता त्राहि–त्राहि कर रही है। ताजा हालात की बात करें तो एक ब्रेड का पैकेट 200 रू. में बिक रहा है। सब्जियों के दाम भी आसमान छू रहे हैं। 1 किलो चीनी 300 रू. और 200 रू. किलो बिक रहा है। नारियल तेल 1000 रू. लीटर है। 1 किलोग्राम चावल के लिए वहां लोगों को 500 रू. देने पड़ रहे हैं। 300 रू. लीटर पेट्रोल और पौने दो सौ रू. लीटर डीजल बिक रहा है। रसोई गैस की कीमत लगभग 5000 रू. तक पहुंच गई है। वहां के नागरिक देश छोड़कर अन्य देशों की ओर धीरे–धीरे निकलने लगे हैं। तटवर्ती तमिलनाडु में लोगों की आवक शुरू हो चुकी है।

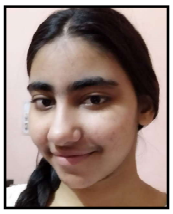

श्रीलंका लगातार कर्ज लेता गया, चीन बार–बार कर देता रहा और कर्ज के बदले एक–एक कर चीन ने श्रीलंका की परिसंपत्तियों को हड़पना शुरू किया। जब तक श्रीलंका के संतुलनकारों की आंख खुलती वहां की जनता बगावत के नक्शे कदम पर चल पड़ी और खबर लिखे जाने तक वहां के प्रदर्शनकारी राष्ट्रपति भवन पर काबिज है।

–वैदेही

प्राप्त जानकारी के मुताबिक विदेशी पर्यटक श्रीलंका छोड़ चुके हैं। कोरोना काल के बाद इस साल पर्यटकों ने फिर वहां आना शुरू किया था, लेकिन रोज–रोज बिगड़ते हालात को देखते हुए लगभग छः लाख से ज्यादा पर्यटकों ने अपनी श्रीलंका की प्रस्तावित यात्रा रद्द करा दी है। श्रीलंका की जीडीपी में पर्यटन सेक्टर की हिस्सेदारी लगभग 12 प्रतिशत है। श्रीलंका को पर्यटन से 3.6 अरब डालर की कमाई होती है। लेकिन अब यह बंद हो गया है। श्रीलंका में 30 प्रतिशत पर्यटक रूस, यूक्रेन, पोलैंड और बेलारूस से आते हैं। यूक्रेन–रूस युद्ध का असर श्रीलंका के पर्यटन को पहले ही डूबा चुका है। इससे पहले कोरोना का असर भी इस पर पड़ा था। अब वहां गृह युद्ध की बनी स्थिति ने आग में घी का काम किया है। पर्यटन से होने वाली कमाई वहां बिल्कुल ठप है।

संकट का एक और कारण प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में कमी का होना भी है, जिसके चलते श्रीलंका के सामने दोहरी चुनौती आ खड़ी हो गई है। एक तरफ उसे अपनी जनता को मुश्किल से उबारने है तो दूसरी तरफ विदेशी कर का भुगतान भी करना है। श्रीलंकाई संतुलन का संकट के पीछे उसकी सरकारी नीतियां अधिक जिम्मेदार है। वहां की सरकार ने कुछ समय पहले रासायनिक खाद पर प्रतिबंध लगाकर जैविक खेती करने का निर्णय लिया था, इससे वहां की कृषि भी प्रभावित हुई।

श्रीलंका में वर्ष 2021 में महंगाई दर 10 फीसदी थी जो दिसंबर आते आते 12 फीसदी हो गई और इस समय तो 18 से 20 फीसदी तक बढ़ गई है। इसलिए श्रीलंका की जनता त्राहिमाम कर रही है। यह सब श्रीलंका पर बढ़ते चीनी कर्ज के कारण है। दूसरी तरफ चीन अपने कर्ज का शिकंजा लगातार करता जा रहा है। श्रीलंका को इस संकट से निपटने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है। मुख्य कारण है श्रीलंका का चीन पर आर्थिक रूप से निर्भर हो जाना और वह इस जाल से निकल नहीं पा रहा है। दरअसल चीन ने भारत को घेरने की स्ट्रिंग्स आफ पल्स रणनीति के तहत श्रीलंका को एक महत्वपूर्ण मोती मानकर अपने साथ ले लिया। यही नहीं चीन की महत्वाकांक्षी परियोजना बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव में भी श्रीलंका को विशेष हिस्सा बना लिया। चीन की चाल को श्रीलंका समझ नहीं पाया और लगातार उसके जाल में फंसता चला गया। श्रीलंका में गहराते आर्थिक संकट के बीच एक अमेरिकी थिंक टैंक ने ठीक ही कहा है कि श्रीलंका को अपनी अर्थव्यवस्था बचाने के लिए फिर से विचार करने की जरूरत है।

श्रीलंका पर चीन का कर्ज इस तरह बढ़ा कि उसका हंबनटोटा जैसा महत्वपूर्ण बंदरगाह लीज पर चीन के हाथों में चला गया। श्रीलंका को चीनी फ़र्टिलाइज़र कंपनी के भुगतान को खारिज करने पर उसके पीपुल्स बैंक को भी ब्लैक लिस्ट में डाला गया। इस तरह चीन के कर जाल में फंसा श्रीलंका इतना परेशान हुआ कि न ही इधर का वचा, न उधर का।

इस बीच श्रीलंका की मदद के लिए कतार में हमेशा सबसे आगे खड़े रहने वाले भारत का बयान सामने आया है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने श्रीलंका की स्थिति को जटिल बताते हुए कहा है कि वहां की स्थिति संवेदनशील और जटिल है लेकिन भारत का समर्थन श्रीलंका के लोगों के लिए है, क्योंकि वह हमारे पड़ोसी हैं। हम उनके जीवन के बहुत कठिन दौर से गुजरने में उनकी मदद करने को प्राथमिकता देंगे। जयशंकर ने दोनों देशों के प्राचीन संबंधों का हवाला देते हुए कहा है कि भारत उन संबंधों को हमेशा कायम रखेगा। इस दौरान भारत के सहयोग वाली परियोजनाओं पर भी लगातार नजरें लगी हुई है। भारत कूटनीतिक तौर पर भी श्रीलंका के मामले को उच्च प्राथमिकता के आधार पर रखने की रणनीति पर काम कर रहा है।

श्रीलंका की हालिया आफत में सरकार द्वारा समय–समय पर की गई मुफ्त की घोषणाएं प्रमुख है। श्रीलंकाई सरकार ने लोगों को अपने पक्ष में करने के लिए तरह–तरह के प्रलोभन देते हुए उन्हें ढेर सारी चीजें मुफ्त में मुहैया कराने का वादा किया। अमेरिकन साहित्यकार चार्ल स्पॉटस ने लिखा है कि दुनिया में कुछ भी मुफ्त में नहीं मिलता। वे लिखते हैं कि जीवन में केवल वही चीज मुफ्त में मिलती है जिसे हम स्वयं पैदा नहीं कर सकते, जैसे ईश्वर की कृपा। आगे वे कहते हैं कि आप इस भुलावे में न रहे की कोई चीज आपको फ्री में मिल रही है। याद रहे आप किसी न किसी तरह हर चीज की कीमत चुका रहे होते हैं। इसे हम भारत में भी दिल्ली और पंजाब जैसे राज्यों द्वारा की जा रही मुफ्त की घोषणाओं के परिपेक्ष्य में भी देख सकते हैं। दिल्ली की केजरीवाल और पंजाब की भगवंत मान की सरकार जिस तरह से बिजली मुफ्त में बांट रही है, उसका बोझ किसी न किसी तरह देश पर ही पड़ रहा है। आर्थिक विशेषज्ञों ने बार–बार इस बात के लिए चेताया है कि विकासशील और अविकसित देशों को मुफ्त की योजनाओं से अक्सर बचना चाहिए, अन्यथा आने वाला कल घातक और विस्फोटक होता जाएगा।

श्रीलंका में यही हुआ। श्रीलंका लगातार कर्ज लेता गया, चीन बार–बार कर देता रहा और कर्ज के बदले एक–एक कर चीन ने श्रीलंका की परिसंपत्तियों को हड़पना शुरू किया। जब तक श्रीलंका के संतुलनकारों की आंख खुलती वहां की जनता बगावत के नक्शे कदम पर चल पड़ी और खबर लिखे जाने तक वहां के प्रदर्शनकारी राष्ट्रपति भवन पर काबिज है। ❑❑

पर्यावरण सुरक्षा के लिए प्लास्टिक पर प्रतिबंध आवश्यक

भारत सरकार ने एक जुलाई 2022 को सिंगल यूज प्लास्टिक (एसयूपी) पर देशव्यापी प्रतिबंध लगा दिया, जिससे कि देश के बिगड़ते पर्यावरण को थोड़ी बहुत राहत दी जा सके। देश में पतले पोलीथीन बैग पर 1999 में भी प्रतिबंध लगाया गया था, परन्तु सरकार का यह कदम 23 वर्षों से निष्प्रभावी साबित हुआ और अब पुनः इस प्रकार का प्रतिबंध लगाया गया है। अब देखना यह है सरकार का यह कदम कितना प्रभावी साबित होता है क्योंकि सरकार का कोई भी कदम तब तक प्रभावी नहीं हो सकता जब तक कि व्यापक जनसहयोग उपलब्ध न हो। किसी भी उत्पाद को यथा सम्भव ज्यादा से ज्यादा बार प्रयोग करना पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से एक प्रभावी कदम होता है।

रसायन शास्त्र के अनुसार सिंथेटिक या नेचुरल आर्गेनिक तत्वों का एक ऐसा समूह जो लचीले गुण के साथ सख्त होने की भी खूबी रखता है उस पदार्थ को प्लास्टिक कहा जाता है। यह बड़े अणु होते है जिन्हें पॉलीमर कहा जाता है तथा मोनोमर के पुनरावृति के क्रम में आपस में कार्बन से जुड़े होते है। पॉलीमर को दो समूहों – थर्मोप्लास्टिक तथा थर्मोसेट्स में बांटा जाता है। थर्माप्लास्टिक को मोड़ा जा सकता है तथा थर्मोसेट्स को मोड़ा नहीं जा सकता है।

वर्ष 1862 में प्रथम बार प्लास्टिक (पार्क्साइन) का सार्वजनिक प्रदर्शन इंगलैंड़ के धातु व अविष्कारक विशेषज्ञ अलेक्जेंड़र पार्क्स ने यह कहते हुए किया था कि निश्चित रुप से भविष्य में इस उत्पाद के मार्फत मानवता का कल्याण होगा। परन्तु कालान्तर में अलेक्जेंड़र पार्क्स गलत सिद्ध हुए तथा अल्पकालिक रुप से मानव की जिंदगी को सुगम बनाने वाली प्लास्टिक आज मानवता के लिए भष्मासुर बन चुकी है। प्लास्टिक विश्व में आज एक त्रासदी के रुप में सामने आयी है क्योंकि यह कई हजार वर्ष तक भी भूमि में अपक्षय नहीं होती है तथा भूमि में यह धीरे धीरे माइक्रो प्लास्टिक के कण में बदल जाती है तथा जलापूर्ति के दौरान यह घरों में घुसपैठ कर जाती है। एक खोज से ज्ञात हुआ है कि यह मानव रक्त में

वर्ष 1862 से शुरु हुआ प्लास्टिक 21वीं सदी आते आते एक बड़ा संकट बन चुका है तथा यह पहाड़ से समुंद्र तक, खेत से हमारे पेट तक पंहुचा गया है। अतः अब सम्पूर्ण विश्व में चिन्ता देखी जा रही है तथा विश्व के 16 देशों ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया है

– स्वदेशी संवाद

भी संचारित हो कर नसों में इकठ्ठी हो जाती है। निर्जन महाद्वीप अंटार्कटिका में माइक्रों रुप में पंहुच गयी है, जिससे विश्व के पर्यावरण व भूजल को गम्भीर हानि पंहुच रही है। आज स्थिति यह बन चुकी है कि हमारे दिन की शुरुआत ही प्लास्टिक से होती है। ऐसे में अब हमें कपड़े, जूट अथवा कागज का झोला उठाना ही पड़ेगा।

सिंगल यूज प्लास्टिक (एसयूपी) हमारे दैनिक जीवन में विभिन्न रुपों में प्रयोग होती है जैसे पाली इथाइलीन टेरी फ्थालेट (पीईटी) जिससे पानी की बोतल, ड़िस्पेंसिंग कंटेनर्स, बिस्कुट की ट्रेज इत्यादि बनते है। हाई डेंसिटी पालीइथाइलीन (एचड़ीपीई) जिससे शैम्पू की बोतलें, दूध की बोतलें, फ्रीजर्स बैग्स, आइसक्रीम कंटेनर्स इत्यादि बनते है, लो डेंसिटी पाली इथाइलीन (एलड़ीपीई) जिससे बैग्स, ट्रेज, कंटेनर्स, फूड़ पैकेजिंग फिल्म बनते है। पाली प्रोपायलिन (पीपी) जिससे पोटेटो चिप बैग्स, माइक्रोवेव ड़िशेज, आइसक्रीम टब्स, बोतलों के ढक्कन बनते है। पाली स्टीरीन (पीएस) जिससे कटलरी, प्लेट कप आदि बनते है।

कुल प्लास्टिक कचरे में एसयूपी की हिस्सेदारी 35 प्रतिशत है तथा प्रति व्यक्ति 3 किलों वार्षिक प्लास्टिक कचरा बनता है। भारत में कुल 2020–21 में 41,26,997 टन प्लास्टिक कचरा बनता है। देश में एसयूपी के उत्पादन के लिए 633 कारखाने चल रहे है तथा 200 ग्राम वार्षिक प्रति व्यक्ति एसयूपी का उत्पदन होता है।

सरकर ने अब कटलरी, चम्मच, फोर्क, चाकू, कप, गुब्बारों में लगन वाली स्टिक, प्लास्टिक के झंड़े, आइसक्रीम की स्टिक, प्लास्टिक के झंडे, आइसक्रीम की स्टिक, प्लेट व ट्रे , मिठाई के ड़िब्बे, अन्य ड़िब्बों पर लगने वाली रैमिंश फिल्म, स्ट्रो इत्यादि पर प्रतिबंध लगाया है। इनके विकल्प के रुप में बांस व अन्य लकड़ियों से बन उत्पाद, कोटेड़ कागज के कप, कागज

कुल प्लास्टिक कचरे में एसयूपी की हिस्सेदारी 35 प्रतिशत है तथा प्रति व्यक्ति 3 किलो वार्षिक प्लास्टिक कचरा बनता है। भारत में कुल 2020–21 में 41,26,997 टन प्लास्टिक कचरा बना।

व कपड़े के झंडे, बायो ड़िग्रेडेबिल प्लास्टिक व लड़की से बनी स्टिक, पेड़ों के पत्तों से बनी प्लेट, पेपर ट्रे, कांच या घातु की प्लेट, पेपर रोल, बायोड़िग्रेडेबिल प्लास्टिक से बनी फिल्म, कागज से या बायोड़िग्रेडेबिल प्लास्टिक से बने स्ट्रा इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है।

अन्य देशों में प्लास्टिक पर प्रतिबंध

फ्रांस – प्लास्टिक पर प्रतिबंध के लिए 2016 में कानून बनाया गया तथा चरणबद्ध तरीके से प्लास्टिक की प्लेटें, कप आदि बर्तनों पर 2020 तक पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया, दैनिक उपयोग की प्लास्टिक के सभी उत्पादों पर व प्रयोग पर प्रतिबंध है तथा प्लास्टिक के विकल्प में जैविक पदार्थों से बने उत्पादों का प्रयोग किया जा रहा है।

आयरलैंड़ – प्लास्टिक बैंग टैक्स 2002 में लगा दिया गया जिससे अब तक प्लास्टिक बैंग के प्रयोग में 94 प्रतिशत की कमी आयी है। लोग प्लास्टिक बैग के प्रयोग पर अधिक टैक्स कर भुगतान करते है।

स्वीड़न – प्लास्टिक पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है। अपितू प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग पर अधिक जोर दिया जाता है। स्वीड़न प्रत्येक तरह के कचरे का रिसाइक्लिंग करके विद्युत का उत्पादन किया जाता है। यह पड़ोसी देशों से कचरा क्रय करता है।

रवांड़ा – यहां प्लास्टिक से जल निकासी के मार्ग अवरुद्ध हो गये थे तथा यहां का इकोसिस्टम ही गड़बडा गया था जिससे सरकार ने प्राकृतिक रुप से सड़नशील न होने वाले सभी उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया। रवांड़ा एक अफ्रीकी देश है तथा 2008 से पूरी तरह से प्लास्टिक से मुक्त है।

भारत में प्लास्टिक पर प्रतिबंध से कठिनाई

भारत में प्लास्टिक के विकल्प का अभाव है। विकल्प सस्ता व सुगमता से उपलब्ध कराया जाना चाहिए, भारत में 70 लाख टन एसयूपी की खपत होती है जो कुल प्लास्टिक का लगभग तिहाई है। अतः इतनी बड़ी एसयूपी को प्रतिबंधित करते समय लोगों को दूसरे माध्यमों की ओर ले जाना अत्यन्त मुश्किल कार्य है। भारत में एसयूपी के उत्पादन व बिक्री में हजारों लोगों को रोजगार मिला हुआ है। जिनके वैकल्पिक आजीविका के बारे में भी सोचना पड़ेगा। अतः विकल्प व वैकल्पिक आजिविका की पर्याप्त व्यवस्था न होने से प्लास्टिक के बाजार पर प्रतिबंध विफल हो जाता है।

उपाय– प्लास्टिक के लाइफ सायकिल एनालिसिस (एलसीए) पर विचार करना चाहिए क्योंकि इससे यह पता चलता है कि किसी उत्पाद के प्रयोग से पर्यावरण पर कितना प्रभाव पड़ता है। इससे यह निष्कर्ष निकला है कि संगल यूज पेपर शापिंग बैंग को चार से आठ बार प्रयोग में लाना चाहिए। एसयूपी के लाखों कप का विकल्प मिट्टी के कुल्हड़ नहीं बन सकते जिन्हें प्रयोग के तुरंत बाद ही फैंक दिया जाता है। माइक्रो प्लास्टिक की समस्या का समाधान बायोड़िग्रेडेबल प्लास्टिक का प्रयोग नहीं बन सकता है। अतः हमें एसयूपी से निपटने के लिए तीन चरणों वाली नीति अपनानी होगी।

(शेष पृष्ठ 20 पर ...)

देश का भविष्य हथियार नहीं, खाद्यान्न है

एक तरफ एक खबर है कि अमरीका के टैक्सास में हथियारों के खुले खेल में 18 से ज्यादा बच्चे मारे गए और दूसरी तरफ आईएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालीना जार्जजीवा ने दुनिया की फूड सप्लाई में सहयोग के लिए भारत से गेहूं निर्यात से बैन हटाने का अनुरोध किया है। एक तरह से कहना चाहिए कि उन्होंने इस मामले में बाकायदा हाथ जोड़े हैं। इससे पूर्व जी–7 देशों ने भी इस मुद्दे पर असंतुष्टता जाहिर की थी। उनका कहना था कि भारत को गेहूं का निर्यात जारी रखना चाहिए। लेकिन क्या वतर्मान हालात ऐसे हैं कि दुनिया के बड़ों–बड़ों के ऐसे दबाव में आ जाना चाहिए। मेरा उत्तर 'न' में है। भारत को अपनी राजनीतिक मजबूती दिखानी चाहिए। हम एक अरब चालीस करोड़ की आबादी वाला देश हैं, जिसमें 80 करोड़ लोग खाद्यान्न असुरक्षा के दायरे में हैं।

यह भी सही है कि इनमें सभी लोग गरीब नहीं हैं लेकिन इन सभी को खाद्यान्न देने की हर साल हमेशा जरूरत पड़ती रही है और आगे भी पड़ती रहेगी। बहुत स्पष्ट है कि गेहूं को लेकर शुरू में जरूर स्थिति दूसरी थी और उसी के अनुरूप सरकार आयात के लिए उत्साहित थी लेकिन तेज गर्मी के कारण उत्पादन और लक्ष्य में कमी के कारण सरकार ने आयात से हाथ खींच कर सराहनीय काम किया। पहले सरकार को लगता था कि वह इस साल में दस मिलियन टन के आस–पास गेहूं निर्यात कर सकेंगे। लेकिन ट्रेड का आंकलन देखें तो 21 मिलियन टन तक निर्यात करने की भी हमारी क्षमता थी। लेकिन हालात बदले तो सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए निर्यात से अपने कदम पीछे कर लिए। दरअसल मौसम में बदलाव के अलावा रूस और यूक्रेन युद्ध की वजह से दुनिया में अनाज को लेकर अफरा–तफरी मची हुई है।

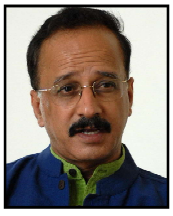

यूक्रेन–रूस युद्ध से यह स्पष्ट हो गया है कि जो 30 मुल्क आज कटोरा लेकर खड़े हैं, उन्हें भी यह समझ आना चाहिए कि इन्होंने अगर अपने देश में पर्याप्त खाद्यान्न पर जोर दिया होता तो यह नौबत नहीं आती।

– देविन्दर शर्मा

लेकिन मेरा स्पष्ट मत है कि देश का यह बड़ा सौभाग्य है कि पिछले कई सालों, 2003–04 से हम देखें तो जो सरकार थीं, उन्होंने हमारे अर्थशास्त्री की बात नहीं सुनीं। सौभाग्य इसलिए क्योंकि अर्थशास्त्री चाहते थे कि सरकार न्यूनतम सपोर्ट मूल्य (एमएसपी), भंडारण को खत्म करें और खेती को मार्किट के हवाले कर दिया जाए। तीनों कृषि कानून भी उसी सोच का एक परिणाम था। कानून को तो लंबे आंदोलन के बाद प्रधानमंत्री ने वापस ले लिया, जो अपने आप में महत्वपूर्ण कदम है। यह सोचने की बात है कि अगर भारत मिनिमम सपोर्ट प्राइस (एमएसपी) के सिस्टम को खत्म कर चुका होता तो क्या आज हम भी दुनिया में अपना कटोरा लेकर नहीं खड़े होते? यह जानना जरूरी है कि हमें 21 सालों से बताया गया था कि हमें प्रतिस्पर्धी अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर भरोसा करना चाहिए। कृषि में निवेश की बात बेकार की बताई जाती थी। लेकिन तब की सरकारों ने अर्थशास्त्रियों की बात को अनसुना कर दिया। यह बहुत अच्छा रहा।

लॉकडाऊन के दौर में सारी अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो गई थी, 27 प्रतिशत से अधिक नैगेटिव में गई थी जीडीपी हमारी। केवल एग्रीकल्चर ने लाज रखी। दो साल के अंदर महामारी के बावजूद। मेरा मानना है कि यदि किसानों ने सरप्लस पैदावार नहीं की होती

स्वदेशी अपनाओ - देश समृद्ध बनाओ

वस्तु	स्वदेशी उत्पादन-प्रयोग करें
नहाने का साबुन	गोदरेज, संतूर, निरमा, स्वस्तिक, मैसूर सँडल, विप्रो–शिकाकाई, फ्रेश, अफगाण, कुटीर, होमाकोल, प्रिमियम, मीरा, मेडिमिक्स, पितांबरी, विमल, चंद्रिका, गंगा, सिंथाल, वनश्री, सर्वोदय, नीम, अनुरा, अनुस्पा, सर्वोदय, पतंजलि तथा लघु–कुटीर उद्योग के अन्य स्थानीय उत्पादन
कपड़े धोने का साबुन	स्वस्तिक, ससा, प्लस, निरमा, ॲक्टो, विमल, हीपोलीन, डेट, पितांबरी, बी.बी., फेना, उजाला, ईज़ी, घड़ी, जेंटिल, मंजुला, अनुरा, अन्य स्थानिक उत्पादन, पतंजलि, अन्य लघु–कुटीर उद्योग के अन्य स्थानीय उत्पादन
सौंदर्य प्रसाधन औषधि	टिप्स एण्ड टोज, श्रृंगार, सिंथॉल, संतूर, इमामी, अफगाण, बोरोप्लस, तुलसी, वीको टर्मरिक, अर्निका, हेयर एण्ड केयर, हिमानी, पॅराशूट, हिमताज, सिल्केशा, नाईल, बलसारा, जेके, डाबर झंडू, सांडू, बेद्यनाथ, हिमालय, भास्कर, तन्वी, बोरोलीन, केराफेड, बजाज सेवाश्रम, प्रकाश, कोकोराज, प्रिमियम, मूव, क्रैक क्रीम, आयुर, पार्क एवेन्यू, कासवछाप नेचर इसेस, पतंजलि और लघु–कुटीर उद्योग के अन्य स्थानीय उत्पादन
टुथपेस्ट दंतमंजन टुथब्रश	बबूल, प्रॉमिस, विको, ओरा, अमर, अँकर, डाबर, बंदर छाप, टु जेल, चॉईस, मिसवाक, अजय, हर्बोडेंट, अजंता, गरवारे ब्रश, क्लासिक, ईगल, दंतपोला, वैद्यनाथ, युवराज, इमामी, पतंजलि, प्रुडंट, विठोबा दंतमंजन तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
दाढ़ी का साबुन ब्लेड्स	गॉदरेज, अफगाण, इमामी, सुपर, स्वदेशी, सुपरमैक्स, अशोक, वी–जॉन, टोपाज, पनाना, प्रीमियम, पार्क एवेन्यू, लेझर, विद्युत, जे.के., कॉस्मोप्लस तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
बिस्कीट चॉकलेट दुग्ध उत्पादन ब्रेड	साठे, बेकमेन, मोनॅको, क्रेकजैक, गिट्स, शालीमार, पॅरी, रावलगांव, निलगिरी, क्लासिक, अमूल, न्यूट्रामूल, मॉन्जीनीज, आरे, कॅमको, सम्राट, रॉयल, विजया, इंडाना, सफल, एशियन, विव्स ब्रेड, वेरका, सागर, सपन, प्रिया गोल्ड, न्यूट्रीन, शांग्रिला, चॅम्पियन, ॲम्प्रो, पार्ले, पतंजलि तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
चाय कॉफी	गिरनार, हसमुख, टाटा टी, आसाम टी, सोसायटी, सपट (इस्टंट), डंकन, बह्मपुत्र, एम.आर., शन, टिपस, इंडीया, अशोक, तेज, टाटा कॅफे, कन्सोलिडेटेट कॅफे, टाटा–टेटली, अमर–टी और अन्य स्थानीय उत्पादन
शीतपेय शरबत, चटनी अचार, मुरब्बा	एनर्जी, सोसयो, कॅम्पाकोला, गुरूजी, ओन्जुस, जाम्पिन, नीरो, पिंगो, फ्रूटी, आस्वाद, डाबर, माला, रसना, हमदर्द, मॅप्रो, रेनबो, कॅल्वर्ट, स्वीटेंब्लिका, रूह–आफजा, जय गजानन, हल्दीराम, गोकुल, बीकानेर, वेकफील्ड, नोगा, प्रिया, अशोक, उमा, एच.पी.एम.सी उत्पाद, हिम तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
पीने का पानी	बिसलेरी, बैली, नॅचरल, अन्य स्थानीय उत्पादन
आईस्क्रीम	दिनशॉ, जॉय, वाडीलाल, श्रीराम, पेस्तनजी, नेचर वल्र्ड, गोकूल, अमूल, हिमालय, निरूला, पेरीना, मदर डेयरी, आरे, विंडी, हॅव मोर, वेरका, नेचरल तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
खाद्यतेल खाद्यपदार्थ	सनफ्लावर, मारूति, पोस्टमैन, धारा, रॉकेट, गिन्नी, स्वीकार, कॉरनेला, सनड्राप, रथ, मोहन, उमंग, विजया, सपन, पॅराशूट, अशोक, सफोला, कोहिनूर, मधुर, इंजन, गगन, अमृत, वनस्पति, एमडीएच, एवरेस्ट, बेडेकर, कुबल, डाबर, सहकार, लिज्जत, गणेश, शक्तिभोग आटा, टाटा नमक, निरमा नमक, जेमिनी, पतंजलि तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
विद्युत उपकरण गृहोपयोगी वस्तु	विडियोकॉन, बी.पी.एल, ओनिडा, सलोरा, ईटीएण्डटी, टी–सीरीज, नेल्को, वेस्टर्न, अपट्रॉन, केल्ट्रान, कॉस्मिक, टीवीएस, गोदरेज, क्राउन, बजाज, उषा, पोलर, ऍकर, सूर्या, ओरिएन्ट, सिन्नी, टूल्लू, क्रॉम्पटन, रवी, जय शंकर, कैलाश, श्रीराम, लॉयड्स, ब्लू स्टार, व्होल्टास, कूल होम, खेतान, जीप, नोविनो, ॲम्प्रो, निर्लेप, इलाईट, अंजली, जयको, सुमीत, बंगाल, मैसूर, हॉकिन्स, प्रेस्टीज, महाराजा, जयपान, प्रेशर कुकर, तृप्ति, आईएफबी, आर.आर. फॅन, तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
घड़ियां	टाइटन, अजन्ता, एचएमटी, मैक्सिमा, आल्विन, फास्ट–ट्रॅक,
लेखन सामग्री	ज़ीफ्लो, विल्सन, कैम्लिन, रेव्हलॉन, रोटोमॅक, सेलो, स्टिक, चंद्रा, मोंटेक्स, कैमल, बिट्टू, प्लेटो, कोलो, त्रिवेणी, फ्लोरा, अप्सरा, नटराज, हिंदुस्तान, ओमेगा, लोटस, लिंक तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
जूते, चप्पल पॉलिश	लखानी, लिबर्टी स्टैन्डर्ड, एक्शन, पैरागॉन, फ्लॅश, करोना, वेलकम, रेक्सोना, रिलैक्सो, लोटस, रेड–टेप, फिनिक्स, वायकिंग, बिल्ली, कार्नोबा, किवी शू पॉलिश, फ्लेक्स, बुडलॅनड तथा अन्य स्थानीय उत्पादन
तैयार कपडें	पीटर इंग्लैंड, व्हॅन हुसेन, ॲलेन सॉली, लुई फिलिप, कलरप्लस, मफतलाल, ट्रेंड, केम्ब्रिज, डबल बुल, झोडिएक, अरविंद डेनिम, डॉन, प्रोलीन, टीटी, लक्स, अमूल, वीआईपी, रूपा, रेमण्ड, पार्क एवेन्यू, अल्टिमो, न्यूपोर्ट, किलर, फ्लाईंग मशीन, डयूक्स, कोलकाता, लुधियाना, मॉन्टे कार्लो, कॉटन किंग, लिनेन किंग तथा तिरुपुर के सभी हौजरी सहित अन्य स्थानीय उत्पादन
मोबाईल फोन	माईक्रोमेक्स, कारबॅन, डी–आई और स्थानीय उत्पादन

विदेशी वस्तु त्याग कर - बोलो वन्देमातरम्

वस्तु	विदेशी उत्पादन का बहिष्कार करे।
नहाने का साबुन	लक्स, लिरिल, लाईफबॉय, पियर्स, रेक्सोना, हमाम, जय, मोती, कैमे, डॅव, पॉड्स, पामऑलिव, जॉन्सन, क्लिएरसिल, डेटॉल, लेसान्सी, जस्मीन, गोस्डमिस्ट, लक्मे, ॲमवे, क्वांटम, मार्गो, फा, नीम
कपड़े धोने का साबुन	सनलाईट, व्हील, एरियल, चेक, डबल, ट्रीलो, ५०१, ओके, की, रिबेल, ॲमवे, क्वांटम, सर्फ एक्सेल, रिन, विमबार, बिझ, रॉबिन ब्लू, और हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड के अन्य उत्पादन
सौंदर्य प्रसाधन औषधि	जॉन्सन, पॉण्ड्स, क्लियरसिल, ब्रिलक्रीम, फेयर एण्ड लवली, वेल्वेट, मेडीकेयर, लेवेंडर, नायसिल, निविया, शॉवर टू शॉवर, क्यूटीकुरा, लिरिल, लॅक्मे, डेनिम, ऑरगॉनिक्स, पेन्टीन, रूट्स, हेड एण्ड शोल्डर, ॲमवे, क्वांटम, क्लीनिक, निहार, कोको केयर, ग्लैक्सो, मॉरटिम, लीओरीयल, ट्रेसेमे, लॅक्मे आदि
टुथपेस्ट दंतमंजन टुथब्रश	कॉलगेट, सिबाका, क्लोजअप, पेप्सोडेंट, सिग्नल, मॅक्लीन्स, ॲमवे, क्वांटम, अक्वा फ्रेश, ओरल–बी, फोरहॅन्स, सेन्सोडाइन
दाढ़ी का साबुन ब्लेड्स	पामऑलिव, निविया, पॉन्डस्, प्लैटिनम, जिलेट, सेवेन–ओ–क्लाक, विलमैन, विल्टेज, इरॅस्मिक, लॅक्मे, डेनिम
बिस्कीट चॉकलेट दुग्ध उत्पादन ब्रेड	नेसले, कॅडबरी, बोर्नव्हिटा, हॉर्लिक्स, बूस्ट, मिल्कमेड, किसान, मैगी, फैरेक्स, अनिकस्प्रे, कॉम्प्लान, किटकैट, चार्ज, एक्लेअर, मॉडर्न ब्रेड, माल्टोवा, व्हिवा, माइलो, मिल्कफूड
चाय कॉफी	ब्रुक बॉंड, ताजमहल, रेड–लेबल, डायमंड, लिप्टन, ग्रीन लेबल, टाईगर, नेसकॅफे, नेसले, डेल्का, ब्रू, सनराईज, थ्री फ्लावर्स, ताजा
शीतपेय शरबत, चटनी अचार, मुरब्बा	लेहर, पेप्सी, सेवन–अप, मिरींडा, टीम, कोका–कोला, मॅकडॉवेल सोडा, मॅगोला, गोल्डस्पॉट, लिम्का, सिट्रा, थम्स–अप, स्प्रिंट, डयूक्स, फॅन्टा, कॅडबरी, कॅनडा ड्राय, क्रश, कॅडबरी ॲपी
पीने का पानी	ॲक्वाफिना, किन्ले, नेसले नॅचरल
आईस्क्रीम	कॅडबरी, डॉलॉप, नाईस, ब्रुक ब्रांड के उत्पादन, क्वालिटी वॉल्स, कॉरनेली, बास्कीन–रॉबिन्स, यांकी–डूडल्स, कॉरनेट्टो
खाद्यतेल खाद्यपदार्थ	डालडा, क्रिस्टल, लिप्टन, अन्नपूर्णा नमक, आटा और चपाती, मॅगी, किसान, तरला, ब्रुक–बॉंड, पिल्सबरी आटा, कैप्टन कुक नमक और आटा, मॉडर्न चपाती, कारगिल आटा, लेज, लेहर, नॉर, मैक्डॉनाल्ड, बर्जर किंग
विद्युत उपकरण गृहोपयोगी वस्तु	जीईसी, फिलिप्स, सोनी, टीडीके, निप्पो, नॅशनल–पैनासोनिक, शार्प, जीई, व्हर्लपूल, सैमसंग, देवू, तोशीबा, एल जी, हिताची, थॉमसन, इलेक्ट्रोलक्स, अकाई, सानसूई, केनवुड, आइवा, कैरियर, टपरवेयर, जापान लाईफ, ओमेगा, टाइमेक्स, राडो, पायोनियर, व्हर्लपुल
घड़ियां	ओमेगा, टाईमेक्स, टीसीएल
लेखन सामग्री	पार्कर, पायलट, विंडसर–न्यूटन, फैबर–कैसेल, लक्ज़र, बिक, मॉंट ब्लैक, कोरस, अेस, रोटरिंग,
जूते, चप्पल पॉलिश	बाटा, प्यूमा, पॉवर, चेरी–ब्लॉसम, आदिदास, रिबॉक, नाइक, लीकूपर,
तैयार कपड़े	ली के सभी उत्पाद, बर्लिंगटन, ॲरो, लकोस्ट, सॅनफिस्को, लेविस, पेपे जीन्स, रैंगलर, बेनेटोन, रीड एण्ड टेलर, बायफोर्ड, क्रोकोडाइल
मोबाईल फोन	चीन के सारे उत्पाद, एम–आई, एप्पो, वीवो, सेमसंग, झिओमी, आयफोन, एप्पल

तो हम दो महामारी झेल पाने की स्थिति में नहीं होते।

कोविड की महामारी तो हो ही गई थी, दूसरी हंगर यानी भूखमरी की महामारी भी सन्निकट थी। मेरा मानना है कि सरकार ने 5 किलो गेहूं जो परिवारों को दिया है, वह सराहनीय कदम रहा, क्योंकि उसने देश को भूख से मुक्त रखा है। जबकि उस दौर में लोगों के रोजगार घटे, नौकरियां गईं।

यूक्रेन–रूस युद्ध से यह स्पष्ट हो गया है कि जो 30 मुल्क आज कटोरा लेकर खड़े हैं, उन्हें भी यह समझ आना चाहिए कि इन्होंने अगर अपने देश में पर्याप्त खाद्यान्न पर जोर दिया होता तो यह नौबत नहीं आती। मान लीजिए कि यह युद्ध लंबा चलता है और जिस प्रकार से हीटवेव हुई तो ऐसे में क्या गारंटी है कि गेहूं का जो सीजन होगा उसमें मौसम ठीक होगा, महामारी नहीं आएगी। ऐसे में जरूरी है कि हमें अपने पास उचित भंडारण रखना होगा और बाकी भूखे देशों को हमेशा भंडारण के लिए तैयार रहना चाहिए।

चीन के पास लगभग 650 मिलियन टन का फूड स्टॉक है लेकिन उनके देश के अर्थशास्त्री कभी नहीं बोलते कि सरप्लस है स्टॉक को निर्यात कर देना चाहिए। यहां सबसे बड़ी दिक्कत है कि जो विदेशी अर्थशास्त्री बोलते हैं, उसे ही कट एंड पेस्ट करके हमारे यहां बोल दिया जाता है।

वैसे भी कृषि विज्ञानी स्वामीनाथन ने कहा था कि देशों का भविष्य हथियारों से नहीं बल्कि खाद्यान्न से होगा। यही सही दृष्टिकोण है। हरित क्रांति ने कई तरह के सबक दिए हैं और हमें अब जरूरत है कि हम ग्रीन रैवोल्यूशन से एवरग्रीन रैवोल्यूशन की तरफ देखें।

हम फर्टिलाइजर का उपयोग कम करें, ट्रांसफार्मेशन पर ध्यान दें और देश की जरूरत को पूरा करें और जो बच जाए उसको निर्यात करें। हमें संतुलन बनाने पर ध्यान देना होगा। यह भी ध्यान देना होगा कि एग्रीकल्चर से निकलने वाली एक तिहाई ग्रीन हाऊस गैस को कम करना होगा। यूरोप व कुछेक अन्य देशों को देखिए, उन्होंने एथनॉल बनाना बंद कर दिया है। पर्यावरण की अनदेखी से ही यह आशंका है कि 2025 तक तापमान में वृद्धि की दर में डेढ़ फीसदी पार हो जाएगी। इसे रोकना है तो कई बदलाव करने होंगे।❑❑

https://www.punjabkesari.in/blogs/news/the-future-of-the-country-is-food-grains-not-weapons-1608544

(पृष्ठ 18 से जारी ...)

पर्यावरण सुरक्षा के लिए प्लास्टिक...

प्रथम चरण में एसयू प्लास्टिक को प्रयोग के बाद एकत्र किया जाये, दूसरे प्लास्टिक कचरे को रिसाइकिल के लिए भेजा जाय न कि लैंड़फिल में भेजा जाय, तीसरा रिसाइकिल की प्रक्रिया से पर्यावरण को कोई हानि नहीं पहुंचे साथ साथ इस प्रक्रिया से पर्यावरण को कोई हानि नहीं पंहुचे साथ साथ इस प्रक्रिया में कार्यरत् होने वाले मानवों के स्वास्थ्य को भी कोई हानि नहीं पंहुचनी चाहिए जिस प्लास्टिक का एकत्र करना अथवा रीसाइकिंलग करना कठिन हो उसका प्रयोग बंद कर दिया जाये। प्रतिदिन प्रयोग होने वाले उत्पादों की पहचान की जानी चाहिए जिन्हें एक बार प्रयोग करके तुरंत फैंक दिया जाता है। अतः स्ट्रा, कटलरी, ईयर बड़ तथा कैरी बैंग पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।

वर्ष 1862 से शुरु हुआ प्लास्टिक 21वीं सदी आते आते एक बड़ा संकट बन चुका है तथा यह पहाड़ से समुंद्र तक, खेत से हमारे पेट तक पंहुचा गया है। अतः अब सम्पूर्ण विश्व में चिन्ता देखी जा रही है तथा विश्व के 16 देशों ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया है तथा सौ से अधिक अपने यहां कड़े कानून प्रतिबंध लगा रहे। भारत में भी बिगड़ती वायु, प्रदूषित पानी और मिट्टी की चुनौती का सामना ग्रीन उत्पादों से करना ही होगा यदि वर्तमान में प्लास्टिक एक आपदा के रुप में सामने आयी है तो इसी आपदा में से अवसर तलाशना ही होगा जिससे बिजली, एल्कोहल, ड़ीजल, पैट्रौल, तारकोल तथा अन्य उत्पादों का उत्पादन करना होगा तथा जहां प्लास्टिक मुक्त भारत का निर्माण हो सकेगा वहीं रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हो सकेगें स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देकर जहां एक ओर हम अपनी समृद्धि का निर्माण कर सकते है। वहीं पर्यावरण को बचा सकते है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इस प्रतिबंध को आतंक की तरह लोगों के दिलोदिमाग में न बैठा कर अपतु जन क्रान्ति व जनअभियान के रुप में बैठाया जाय तथा लोग दिल से स्वतः ही इस प्रतिबंध को अंगीकार करे। इस बारे में वैज्ञानिक सोच भी विकसित कर प्रयोगशालाओं में अभी और खोज की जाये जिससे प्लास्टिक का प्रदूषण रहित रीसाइक्लिंग की व्यवस्था प्रत्येक शहर, कस्बे, तथा गांव तक निर्मित की जा सकें। इस पर होने वाला व्यय व्यय नहीं है। अपितु एक ऐसा विनिवेश साबित होगा जिससे लोगों को प्रदूषण मुक्त जल, थल, व अम्बर के साथ वायु भी शुद्ध रुप से प्राप्त हो सकेगी और मानव जाति रोगमुक्त होने के साथ साथ वैचारिक रुप से शुद्ध भी हो जायेगी तभी देश का विकास भी द्रुत गति से होगा। सभी भारतियों का इस प्रतिबंध का सहर्ष व दिल से स्वागत कर सहयोग देना सुनिश्चित करना चाहिए। ❑❑

(डॉ. सूर्य प्रकाश अग्रवाल के ई–मेल से)

बन्दूकों से त्रस्त अमरीकी जनता

हालांकि संयुक्त राज्य अमरीका के हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव ने 8 जून, 2022 को बंदूकों की बिक्री को प्रतिबंधित करने वाला एक बिल पारित किया है, लेकिन इसकी बहुत कम संभावना है कि यह बिल कानून बन जाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि रिपब्लिकन पार्टी सीनेट में बिल का विरोध करने के लिए दृढ़ हैं। कोई नहीं जानता कि आम अमेरिकियों को कब तक इस खतरे में रहना पड़ेगा कि कभी भी कोई आकर बिना उकसावे के शूटिंग शुरू कर देगा। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि आने वाले चुनाव में यह मुद्दा जोर पकड़ेगा।

यह बिल एक चौंकाने वाली घटना के बाद आया है जहां तुलसा मेडिकल बिल्डिंग में बंदूक की गोली से 5 लोगों की मौत हो गई थी, जो 2022 की 233वीं सामूहिक शूटिंग की घटना थी। इससे पहले एक बंदूकधारी ने टेक्सास के उवाल्डे के एक प्राथमिक विद्यालय में 19 युवा छात्रों और 2 शिक्षकों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस घटना से ठीक दो हफ्ते पहले, न्यूयॉर्क के बफ़ेलो में एक किराने की दुकान पर नस्लवादी हमले के दौरान 10 लोगों की मौत हो गई थी और तीन अन्य घायल हो गए थे। यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि इनमें से अधिकतर घटनाओं में हत्यारे आतंकवादी नहीं, बल्कि पगलाए से युवक थे। कुछ लोग तो यह कहने लगे हैं कि अफ़ग़ानिस्तान में युद्ध में जाने से अमरीका में रहना ज़्यादा जोखिम भरा है।

यह पहली बार है कि अमेरिका के किसी राष्ट्रपति ने बंदूक रखने की प्रणाली और संस्कृति के खिलाफ कड़े शब्दों का इस्तेमाल किया है। बाईडन ने 02 जून, 2022 को अपने संबोधन में कांग्रेस से हथियारों पर प्रतिबंध लगाने या खरीदने के लिए आयु को 18 से 21 वर्ष करने और अन्य उपायों के माध्यम से संयुक्त राज्य में बंदूक हिंसा को रोकने का आह्वान किया है। उन्होंने उच्च क्षमता वाली बन्दूकों पर प्रतिबंध, पृष्ठभूमि की जाँच, रेड फ़्लैग कानून, और बंदूक निर्माताओं, यदि उनके हथियारों का उपयोग हिंसा में किया जाता है, को कानूनी दायित्व से बचाने हेतु प्रतिरक्षा को निरस्त करने हेतु क़ानून बनाने का प्रस्ताव रखा है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में शायद, बंदूक खरीदना सबसे आसान है। बंदूकें इतनी आसानी से उपलब्ध हैं, और बिना किसी पृष्ठभूमि की जांच के, हजारों दुकानों में लगभग सब्जियों की तरह खरीदी जा सकती हैं।

–स्वदेशी संवाद

बंदूकों का देश अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिका में शायद, बंदूक खरीदना सबसे आसान है। बंदूकें इतनी आसानी से उपलब्ध हैं, और बिना किसी पृष्ठभूमि की जांच के, हजारों दुकानों में लगभग सब्जियों की तरह खरीदी जा सकती हैं। इसके अलावा, लोग अक्सर रिश्तेदारों और दोस्तों से भी बंदूकें खरीदते हैं। भारत के विपरीत, बंदूक खरीदने के लिए, एक व्यक्ति को यूएसए में लाइसेंस रखने की आवश्यकता नहीं है। फॉर्म भरकर केवल ख़रीदने वाले के बारे में कुछ जानकारी देनी होती है। जानकारी भरने के कुछ ही मिनटों के भीतर, संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) द्वारा सत्यापन किया जाता है और बंदूक खरीदार के हाथों में पहुंच जाती है।

एफबीआई की वेबसाइट के मुताबिक, पिछले एक दशक में 10 करोड़ मामलों में जांच की मांग की गई और सिर्फ 7 लाख लोगों को बंदूक खरीदने के लिए अयोग्य पाया गया, यानी कुल का एक प्रतिशत से भी कम। हम समझ सकते हैं कि अमरीका का लगभग हर नागरिक बंदूक रखने का पात्र है। पिछले कुछ वर्षों में हत्याओं में तेजी के साथ, यह कहा जा रहा है कि बंदूक रखने में आसानी से हत्याओं और अवैध गतिविधियों को बढ़ावा मिल रहा है।

हालांकि, अन्य देशों के नागरिकों के सांस्कृतिक लक्षणों पर टिप्पणी करना ठीक नहीं है, लेकिन जिस मात्रा में वहाँ हत्याएं हो रही हैं, हम अमेरिकियों में असंवेदनशीलता और असहिष्णुता के बारे में सोचने के लिए मजबूर हैं। ऐसी परिस्थितियों में, बंदूक रखने में आसानी से दूसरों की हत्या करना आसान हो जाता है। उल्लेखनीय है कि इन हत्याकांडों में नाबालिगों सहित सभी आयु वर्ग के लोग शामिल हैं।

बंदूक लॉबी

हालांकि, बंदूकों से हत्याओं का पुराना इतिहास है, लेकिन हाल के दिनों में यह प्रवृत्ति तेज हुई है। अमरीका में बंदूकें प्रतिबंधित करने की मांग लंबे समय से की जा रही है, और कई राजनीतिक नेता बंदूक कानूनों को सख्त बनाने की कोशिश भी कर रहे हैं, लेकिन सख्त कानून बनाने के अपने प्रयास में उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसके पीछे मजबूत गन लॉबी है। 1871 के बाद से, संयुक्त राज्य अमेरिका में नेशनल राइफल एसोसिएशन (एनआरए) एक मजबूत संगठन रहा है, जो 1934 से कमजोर बंदूक कानूनों के लिए सीधे राजनीतिक पैरवी में लगा हुआ है। हालांकि, एनआरए के लगभग 50 लाख सदस्य हैं, जो एसोसिएशन के लिए योगदान करते हैं, एनआरए के वित्तपोषण का बड़ा हिस्सा बंदूक निर्माता कंपनियों से आता है। स्पष्ट कारणों से, यह संगठन बंदूक रखने के खिलाफ कोई सख्त कानून बनाने के किसी भी प्रयास को विफल करने के लिए हर संभव प्रयास करता है। हम इस गन लॉबी के प्रभाव का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि एनआरए ने 2020 में लगभग 250 मिलियन डॉलर खर्च किए, जो देश के सभी बंदूक कंट्रोल एडवोकेसी समूहों के द्वारा बन्दूकों को सीमित करने पर किए गए खर्च से कहीं अधिक है। अपनी मजबूत वित्तीय ताकत के बल पर, यह संगठन सीनेट के सदस्यों को पैसा देता है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में बंदूकों पर अंकुश लगाने के प्रयासों को हराने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

गन बिल

हालांकि, रिपब्लिकन खुद आम तौर पर यथास्थिति बनाए रखने की कोशिश करते रहे हैं, 2016 में ऑरलैंडो नरसंहार के दबाव में बंदूक कानूनों पर एक बिल लाया था, जिसके अनुसार न्याय विभाग को जांच के लिए तीन दिन के समय का प्रावधान था। यह उल्लेखनीय है कि ऑरलैंडो हिंसा में शामिल आतंकवादी के बारे में कम से कम दो बार पूछताछ की गई थी, फिर भी वह बंदूक ख़रीद सका था। इसलिए बिल के समर्थकों का कहना है कि इस बिल के कानून बनने से आतंक से जुड़े लोगों के लिए बंदूकें रखना मुश्किल हो जाएगा।

दूसरी ओर, डेमोक्रेट्स ने इस बिल का समर्थन नहीं किया और वे चाहते थे कि सिर्फ़ आतंकवादी लिंक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं के संदेह में लोगों को ही बंदूक से वंचित किया जाए। बंदूक कानून में प्रस्तावित बदलावों के बारे में एकमत न होने के कारण जून 2016 में भी बंदूक कानून नहीं बनाया जा सका। अब इस बात पर बहस चल रही है कि क्या सरकार को उन लोगों को बंदूक देने से मना करने का अधिकार होना चाहिए जिनके पास आतंकी संबंध या मनोवैज्ञानिक समस्याएं हैं या कानून विभाग के पास अनुमति के लिए हां या ना कहने के लिए 3 दिन का समय है और इनकार करने की जिम्मेदारी सरकार पर है। एनआरए इसे निजता पर हमला बताते हुए मनोवैज्ञानिक समस्याओं वाले लोगों के बारे में डेटा साझा करने का भी विरोध करता रहा है।

राष्ट्रपति ओबामा को कुछ प्रशासनिक आदेश जारी करने और बंदूकों की खरीद पर प्रतिबंध लगाने के लिए गन लॉबी की बहुत आलोचना का भी सामना करना पड़ा। इसलिए, चाहे वह सख्त बंदूक कानून बनाने का मुद्दा हो या बंदूकों को प्रतिबंधित करने के लिए कोई प्रशासनिक कार्रवाई करने की बात हो, गन लॉबी हमेशा बाधा उत्पन्न करने की कोशिश करती है। कभी–कभी बंदूकें रखने के अधिकार के नाम पर या निजता के बहाने, यह लॉबी सीनेटरों के समर्थन से या कानूनी लड़ाई से भी, बंदूकों पर अंकुश लगाने के प्रयासों को विफल करने की कोशिश करती है।

हालांकि, मानवता के समक्ष कॉर्पोरेट हितों को प्राथमिकता देने का यह पहला मामला नहीं है; हम आज यह सोचने के लिए मजबूर हैं कि उनके लिए लाभ ही उनका एकमात्र उद्देश्य है, भले ही वह निर्दोष लोगों की जान की कीमत पर भी क्यों न हो। अब, जब राष्ट्रपति जो बाइडेन ने बंदूकों को प्रतिबंधित करने के लिए नए सिरे से प्रयास करना शुरू कर दिया है, और बंदूकों के खिलाफ एक कानून की तैयारी भी शुरू कर दी है, लेकिन इस मुद्दे से जानकार लोगों को इससे उम्मीद नहीं है कि अमेरिका में आम लोगों को इस समस्या से कोई राहत मिलेगी। ❑❑

फिर गहराई बाढ़ की विभीषिका

वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही देश के उत्तर पूर्वी राज्यों के साथ ही गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, तेलंगाना एवं छत्तीसगढ़ में हुई अत्यधिक वर्षा ने बाढ़ की गंभीर स्थिति उत्पन्न हो चुकी है। देश के 20 से अधिक राज्यों में लगातार बरसात हो रही है। गुजरात में भारी वर्षा से अब तक 63 लोग काल के गाल में समा चुके हैं। वही महाराष्ट्र में अब तक 76 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। असम भी भयंकर स्थिति से गुजर चुका है और निरंतर बाढ़ की स्थिति बनी हुई है, जिसने सैकड़ों लोगों की जिंदगी छीन ली है। गुजरात के 8 जिलों में रेड अलर्ट जारी किया गया है। गुजरात के डांग, तापी, नवसारी, वलसाड, पंचमहल, छोटा उदयपुर और खेड़ा अत्यधिक प्रभावित जिले है, जहां से 10700 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है किंतु भारी बारिश से बाढ़ की स्थिति निरंतर भयंकर बनी हुई है। छोटा उदयपुर जिले में लगातार वर्षा से पुल का एक हिस्सा गिर गया है जबकि गुजरात के तापी जिले के पांचाल और कुंभिया को जोड़ने वाला पुल भी बाढ़ की भेंट चढ़ चुका है जिससे आवागमन बाधित हो गया है। राज्य के 388 मार्ग तथा पांच अंडरपास बाढ़ की भयंकर स्थिति को देखते हुए बंद कर दिए गए हैं। भारी बारिश के चलते बड़ोदरा के प्रतापनगर और छोटा उदयपुर जिले के बीच ट्रेन सेवा बाधित हो गई है। क्षेत्र में भारी बारिश के बाद प्रताप नगर, छोटा उदयपुर खंड पर बोडेली और पावी जेतपुर के बीच का ट्रैक बह गया है, जिसके चलते अनेक ट्रेनों का संचालन बंद कर दिया गया है। बाढ़ की दुर्दशा में महाराष्ट्र भी पीछे नहीं हैं। महाराष्ट्र के गढ़चिरौली, नासिक समेत कई जिलों में भारी बारिश से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है। वर्षा से प्रभावित होकर महाराष्ट्र में अब तक 76 लोगों की मृत्यु हो चुकी है तथा प्रशासन द्वारा 4916 लोगों को बाढ़ प्रभावित क्षेत्र से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाकर उनके जान माल की रक्षा की गई है।

भारत में बाढ़ की यह स्थिति हर वर्ष बनती है जिसके कारण देश के विभिन्न राज्यों को समय–समय पर भयंकर स्थिति से गुजरना पड़ता है किंतु अदूरदर्शिता के चलते समय से ठोस कार्यवाही कर सुरक्षा व्यवस्था न किए जाने के कारण बाढ़ की विभीषिका अत्यंत भयंकर हो जाती है, जिसका सामना करना पड़ता है।

– डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र

इस साल असम ने बाढ़ की जिस विभीषिका का सामना किया है, वैसी स्थिति पूर्व के वर्षों में कभी देखने को नहीं मिली। ब्रह्मपुत्र घाटी में पड़ने वाला बरपेटा जिला लगभग पूरी तरह पानी में डूब गया था। राहत शिविर तक कहीं बनाने की जगह नहीं थी। राज्य का महत्वपूर्ण शहर सिलचर पूरी तरह बाढ़ के आगोश में था, 2 सप्ताह तक सिलचर की स्थिति अत्यंत भयंकर बनी रही, पीने का पानी तक ड्रोन और हेलीकॉप्टर के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया गया। अब तक असम में लगभग 24 लाख लोग बाढ़ प्रभावित हुए हैं, जिनमें से 7 लाख लोग अकेले बरपेटा से हैं।

वस्तुतः असम की इस बाढ़ विभीषिका का मुख्य कारण अप्रैल और मई महीने में हो रही वर्षा को दृष्टि में रखकर आवश्यक कदम न उठाए जाना रहा है, जिसके कारण समस्त बांध अपनी क्षमता तक भर गए थे। ऐसी स्थिति में प्रशासन का दायित्व था कि वह नागालैंड, मेघालय, भूटान आदि से बात करके बांधों का पानी धीरे–धीरे छोड़ता, किन्तु ऐसा नहीं किया गया और जब जून में अत्यधिक बारिश हुई तो बांधों के पास पानी छोड़ने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था।

भारत में बाढ़ की यह स्थिति हर वर्ष बनती है, जिसके कारण देश के विभिन्न राज्यों को समय–समय पर भयंकर स्थिति से गुजरना पड़ता है। किंतु अदूरदर्शिता के चलते समय

से ठोस कार्यवाही कर सुरक्षा व्यवस्था न किए जाने के कारण बाढ़ की विभीषिका अत्यंत भयंकर हो जाती है। देश के पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़ की विभीषिका तो उनकी भौगोलिक स्थिति और वहां होने वाली अत्यधिक वर्षा का परिणाम है किंतु अन्य राज्यों में वर्षा ऋतु के आगमन के पूर्व सुरक्षा व्यवस्था को चाक–चौबंद कर उससे होने वाली क्षति को न्यूनतम किया जा सकता है।

आखिर ऐसी कौन सी स्थितियां बनी, जिससे सदियों से निरंतर प्रवाहमान जल अपने मार्ग पर आगे न बढ़कर शहरों में सैलाब के रूप में उपस्थित हुआ और शहरों में कहर बनकर बरपा। प्रश्न एक ही है कि शहरों में वहां की व्यवस्था को अस्तव्यस्त कर जनजीवन के समक्ष प्रश्नचिन्ह बनकर शहरों में सैलाब बनकर क्यों उपस्थित हुआ तथा तथा भयंकर बाढ़ क्यों आई?

शहरों में सैलाब का आना कोई अकस्मात घटित घटना नहीं है, अपितु मनुष्य एवं प्रकृति के बीच निरंतर चल रहे संघर्ष का परिणाम है। जब तक मानव और प्रकृति में सहअस्तित्व के संस्कार एवं भावना विद्यमान थी तब तक वह दोनों एक दूसरे के पूरक बनकर कार्य करते रहें। प्रकृति, जीवन और संसार का पोषण निरंतर करती रही किंतु विकासोन्मुखी व्यवस्था को दृष्टि में रखकर निरंतर प्रयासरत मानव प्रकृति के अस्तित्व को अस्वीकार कर निरंतर उसके साथ छेड़छाड़ करते हुए मनमाना आचरण करने लगा, जिससे प्रकृति का कुपित हो जाना और जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून के आने और जाने का समय भी परिवर्तित हो जाने से उसका आकलन कर पाना असंभव सा हो गया है।

पूर्व में प्रायः बस्तियों का निर्माण नदियों के एक किनारे ही किया जाता था नदियों का दूसरा छोर उनके प्रवाह एवं फैलाव के लिए छोड़ दिया जाता था, परिणामस्वरूप नदियों के बहने के लिए पर्याप्त स्थान था तथा उनकी धारा बिना किसी बाधा के अपने तटवर्ती एवं समीपवर्ती स्थानों में वर्षा जल के रूप में अकस्मात प्राप्त जल की अगाध राशि को अन्य नदी नालों के माध्यम से प्राप्त कर अपनी धारा में समाहित कर उसे गंतव्य तक पहुंचाती थी। किंतु आज शहरीकरण की दौड़ में शहरों का अनियंत्रित विकास हुआ। गांव से शहरों की ओर आ रही आबादी बिना कुछ सोचे विचारे जहां जगह मिली वही आवास बनाकर बस गई तथा शहरों एवं मानव बस्तियों के एक किनारे से बहने वाली नदियां आज शहरों के मध्य में आ गई हैं जिससे जल की मात्रा बढ़ जाने पर उनका जल नदी की सीमा तोड़कर शहरों एवं मानव बस्तियों में सहज रूप में प्रवेश कर जाता है और वहां सैलाब की स्थिति उत्पन्न कर देता है। इस समस्या के मूल में शहरों की सैकड़ों वर्ष पुरानी सीवर और जल निकासी व्यवस्था है, जो शहरों के वर्तमान आबादी एवं क्षेत्र के सामान्य भार को ढोने में सक्षम न होने के कारण अकस्मात जल में वृद्धि हो जाने पर जल वृद्धि एवं जलभराव की समस्या उत्पन्न होती है। शहरों में आने वाली बाढ़ की समस्या के समाधान के लिए विद्यमान नालों की साफ–सफाई कर उसकी गाद निकालने के साथ ही साथ उनका आकार बढ़ाने के काम को भी प्राथमिकता के साथ करना होगा इसके साथ ही शहरों के ड्रेनेज सिस्टम में विद्यमान कमियों को दूर करना भी प्रथम लक्ष्य होना चाहिए क्योंकि ड्रेनेज सिस्टम में विद्यमान अव्यवस्था और उसकी कमियों के कारण ही शहरों की जल निकासी की व्यवस्था पंगु हो जाने के कारण बाढ़ की स्थिति बन जाती है।

प्राचीन काल में वर्षा जल के संग्रहण के लिए जल स्रोतों का निर्माण कराया जाता था। गांव एवं शहर सभी में जल संचयन की उत्तम व्यवस्था हुआ करती थी। आबादी के साथ–साथ कुआ तालाब बावड़ियों का जाल बिछा हुआ था। राज परिवार तथा धनी मानी व्यक्ति जीव जगत के कल्याण हेतु जल संग्रहण की इच्छा से कुआ तालाब तथा बावड़ियों का निर्माण कराया करते थे जिससे जहां एक और इनके प्रभाव से भूगर्भ का जल स्तर काफी ऊंचा हो जाता था वहीं दूसरी ओर जीव जगत के लिए उसकी आवश्यकता अनुसार पर्याप्त मात्रा में पानी भी सहज रूप में उपलब्ध हो जाता था। अब विकास की दिशा में इन प्राकृतिक एवं मानव निर्मित जल संसाधनों का आज कोई महत्व नहीं रह गया, परिणामस्वरूप अपने आगोश में जल की अगाध राशि को समेट लेने वाले यह जल संसाधन मृत प्राय हो गए हैं। कोई इनकी सुध लेने वाला नहीं है। यह जल स्रोत वर्षा ऋतु में प्राप्त जल का संग्रहण कर भूगर्भ के जल के स्तर को बढ़ाते हुए वर्ष पर्यंत न केवल जीव जगत को उनकी आवश्यकतानुसार जल उपलब्ध कराते थे अपितु भूगर्भ के जल स्तर को भी बढ़ाकर जल की उपलब्धता सुनिश्चित करते थे किंतु अब इन जल स्रोतों की ओर ध्यान न दिए जाने से यह समाप्ति के कगार पर पहुंच गए हैं।

भारत में बाढ़ की यह स्थिति हर वर्ष बनती है जिसके कारण देश के विभिन्न राज्यों को समय–समय पर भयंकर स्थिति से गुजरना पड़ता है किंतु अदूरदर्शिता के चलते समय से ठोस कार्यवाही कर सुरक्षा व्यवस्था न किए जाने के कारण बाढ़ की विभीषिका अत्यंत भयंकर हो जाती है, जिसका सामना करना पड़ता है। देश के पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़ की विभीषिका तो उनकी भौगोलिक स्थिति और वहां होने वाली अत्यधिक वर्षा का परिणाम है किंतु पूर्वोत्तर राज्यों सहित देश के अन्य राज्यों में वर्षा ऋतु के आगमन के पूर्व सुरक्षा व्यवस्था को चाक–चौबंद कर उससे होने वाली क्षति को न्यूनतम किया जा सकता है। ❑❑

भारतीय अर्थव्यवस्था में गुणात्मक सुधार

बदलते परिदृश्य में भारत अपनी विकासोन्मुख नीतियों, योजनाओं जैसे कि प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा, बुनियादी ढांचे के विकास में खर्च में वृद्धि, अर्थव्यवस्था का डिजिटलीकरण, भू राजनीतिक परिवर्तनों और व्यापार संबंधों के सकारात्मक प्रभाव के साथ लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में सतत प्रयत्नशील है।

–शिवनंदन लाल

महंगाई के मोर्चे पर थोड़ी ही सही मगर राहत मिली है, वही पीएचडीसीसीआई की एक ताजा रिपोर्ट के मुताबिक भारत दुनिया की शीर्ष 10 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में इकलौता है जिसने अपनी अर्थव्यवस्था में लगातार सुधार दर्ज किया है। भारत की वर्ष 2021 में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी 7 प्रतिशत के करीब थी, जिसके अगले 5 वर्षों में 8.5 प्रतिशत से अधिक बढ़ने का अनुमान है। 90 के दशक में शुरू हुए आर्थिक सुधारों के बाद भारत की अर्थव्यवस्था की वैश्विक व्यापार में हिस्सेदारी बढ़ने लगी और भारत आज वैश्विक व्यापार में प्रमुख हिस्सेदार बन गया है। फलस्वरूप बेसिक वस्तुओं के निर्यात में भारत की हिस्सेदारी, जो 2000 में मात्र 0.6 प्रतिशत थी, अब बढ़कर 2020 में लगभग 1.9 प्रतिशत हो गई है। इसी अवधि के दौरान सर्विस निर्यात का प्रदर्शन और भी अधिक प्रभावशाली हुआ है और भारत में वैश्विक सर्विस निर्यात में लगभग 4 प्रतिशत का योगदान दिया है। भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था में भी बाहरी क्षेत्र का योगदान बढ़ने लगा है। भारतीय अर्थव्यवस्था का बढ़ता वैश्वीकरण अर्थव्यवस्था के वैश्विक व्यापार के लिए खुलने के प्रमुख मानक आयात और निर्यात की जीडीपी में हिस्सेदारी में भी प्रतिबिंबित हो रहा है। वस्तुओं एवं सेवाओं के आयात और निर्यात का शेयर जीडीपी में 2007–08 में 41 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 60 प्रतिशत हो गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ती बाहरी क्षेत्र की भूमिका को 2015 से 2019 के दौरान थोड़ा ब्रेक लगा था, जिसका मुख्य कारण बाहरी एवं घरेलू दोनों ही थे। बाहरी कारणों में विश्व की अर्थव्यवस्था में सुस्ती, वैश्विक मांग प्रमुख थे। घरेलू कारणों में भारत सरकार द्वारा 2016 में विमुद्रीकरण, नोटबंदी और 2017 में जीएसटी के शुभारंभ से आपूर्ति श्रृंखलाओं में अल्पकालिक व्यवधान और भारतीय रुपए की डॉलर के मुकाबले थोड़ी कमजोरी प्रमुख थे। इन अल्पकालिक बाधाओं के बावजूद इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि आने वाले वर्षों में बाहरी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने में भारत की भूमिका प्रमुख रहेगी।

2020 की शुरुआत में कोरोना महामारी के आगमन से और परिणामी राष्ट्रीय लॉकडाउन, अंतरराष्ट्रीय सीमा पर प्रतिबंधों और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान से अंतरराष्ट्रीय व्यापार की मात्रा में दुनिया की तर्ज पर भारत में भी भारी गिरावट दर्ज की गई थी। तत्कालीन आंकड़ों के अनुसार इस गिरावट की दर 13 से लेकर 23 प्रतिशत तक की सीमा

में आंकी गई थी। हालांकि यह प्रभाव ज्यादा देर तक स्थाई नहीं रह सका और परिणाम पलटते हुए दिखे। भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार ने तेजी से गति पकड़ी और जल्दी ही रिकवरी दर्ज हुई और व्यापार की मात्रा 2021 में महामारी के पहले के स्तर पर पहुंच गई। आंकड़ों के अनुसार सर्विसेज के व्यापार में वस्तुओं के व्यापार की तुलना में काफी अधिक गिरावट आई थी, पर इसमें सुधार की दर भी धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगी। भारत के सर्विसेज निर्यात में 2020 की पहली तिमाही में 22 प्रतिशत की गिरावट आई थी।

महामारी से प्रेरित वैश्विक उथल–पुथल ने कुछ नए अवसरों को भी जन्म दिया और इन अवसरों के कारण व्यापार के वैश्वीकरण की गति में तेजी आई। स्थापित सिद्धांत यह बताता है कि वैश्वीकरण का नया रूप मुख्य रूप से सेवाओं के संचालन के तरीके को बदलकर सेवा क्षेत्र को प्रभावित करता है। इस परिवर्तन से डिजिटली इनेबल्ड सर्विसेज सेक्टर जैसे कि फिटनेस, ई–कॉमर्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्रिप्टो करेंसी, दिल्ली हेल्थ, ऑनलाइन शिक्षा जैसे नए क्षेत्र में नए अवसर पैदा हुए हैं। भारत ने अपने इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के बड़े पुल के बल पर डिजिटल टेक्नोलॉजी की नई दुनिया को न केवल अपनाया है बल्कि इसमें मजबूत उपस्थिति भी दर्ज कराई है। अब ताजा रिपोर्ट यह भी बता रही है कि दुनिया के कई विकसित देश भारत के इस मॉडल की ओर देख रहे हैं।

पिछले कुछ सालों के दौरान भारत के व्यापारिक भागीदारों की हिस्सेदारी में भी महत्वपूर्ण बदलाव आया है। पश्चिम के देशों के साथ व्यापार में वृद्धि के साथ–साथ भारत के निर्यात में एशिया का हिस्सा धीरे धीरे कम हो रहा है। भारत पश्चिमी देशों के साथ नए क्षेत्रों में व्यापार संबंध स्थापित करने की तलाश

उल्लेखनीय है कि कुछ पश्चिमी देशों के चीन के साथ संबंध हाल के वर्षों में अपेक्षाकृत खराब हुए हैं। इस स्थिति का फायदा उठाने के लिए भारत ने कुछ देशों के साथ टैरिफ मुक्त व्यापार समझौतों की पहल में आगे बढ़ा है। कई एक खाड़ी देशों के साथ भी इस तरह की व्यापारिक बातचीत चल रही है।

में है, क्योंकि आसियान क्षेत्र में भारत का निर्यात गैर टैरिफ बाधाओं को कम करने के बावजूद पिछले कुछ वर्षों में लगभग स्थिरता हो गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि श्रम प्रधान उत्पादों के साथ भारत के निर्यात का सामान अन्य आसियान देशों से बहुत अलग नहीं है। भारत ऑस्ट्रेलिया और यूरोप के कुछ देशों के साथ वैकल्पिक व्यापारिक भागीदार के रूप में आगे बढ़ रहा है। उल्लेखनीय है कि कुछ पश्चिमी देशों के चीन के साथ संबंध हाल के वर्षों में अपेक्षाकृत खराब हुए हैं। इस स्थिति का फायदा उठाने के लिए भारत ने कुछ देशों के साथ टैरिफ मुक्त व्यापार समझौतों की पहल में आगे बढ़ा है। कई एक खाड़ी देशों के साथ भी इस तरह की व्यापारिक बातचीत चल रही है।

महामारी ने भारत के फार्मा उद्योग के लिए भी अवसर खोले हैं। भारत का फार्मा निर्यात उसके कुल निर्यात का 6.6 प्रतिशत है और भारत की जीडीपी में इसका लगभग 2 प्रतिशत का योगदान है। भारत दुनिया में चिकित्सा वस्तुओं का 12वां सबसे बड़ा निर्यातक देश है और पिछले दो दशकों के दौरान भारत का फार्मा निर्यात गुड्स निर्यात की तुलना में कुछ ज्यादा ही तेजी से आगे बढ़ा है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए एक शोध के अनुसार भविष्य में घरेलू फार्मा उद्योग के विकास को बढ़ाने के लिए सबसे जरूरी है, शोध पर खर्च में वृद्धि और एक्टिव फार्मास्यूटिकल इनग्रेडिएंट के आयात पर निर्भरता को कम करना। सरकार ने इस दिशा में भी कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं ताकि कुछ प्रमुख ड्रग इंटरमीडिएट सप्लाई के लिए आयात पर निर्भरता को कम किया जा सके।

बदलते परिदृश्य में भारत अपनी विकासोन्मुख नीतियों, योजनाओं जैसे कि प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा, बुनियादी ढांचे के विकास में खर्च में वृद्धि, अर्थव्यवस्था का डिजिटलीकरण, भू राजनीतिक परिवर्तनों और व्यापार संबंधों के सकारात्मक प्रभाव के साथ लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में सतत प्रयत्नशील है। इसके लिए निर्यात की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं में विविधता लाकर वैश्विक बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने पर भी ध्यान देना जरूरी है। ❑❑

अधर में लटक सकता है बीआरआई का भविष्य

चीन ने जिस बेल्ट रोड़ योजना को बड़े जोश से दुनिया के सामने रखा था और जिस गरमजोशी से इस योजना को सभी संबंधित मुल्कों ने स्वीकार किया था, जिस प्रकार से इस संबंध में कई मुल्कों में इस योजना को कार्यान्वित किया गया था और कई परियोजनायें अत्यंत कम समय में तैयार भी हो गई थी, आज उनका भविष्य अधर में लटका दिखाई दे रहा है।

गौरतलब है कि बेल्ट रोड पहल या बेल्ट रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) चीन द्वारा प्रस्तावित एवं समर्थित एक भारी भरकम इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजना है, जिसे औपचारिक तौर पर चीन ने 2013 में दुनिया के सामने रख दिया था। इस बाबत बीआरआई फोरम का पहला सम्मेलन वर्ष 2017 में बुलाया गया था, जिसमें 100 से ज्यादा मुल्कों ने भाग लिया था और ऐसा लगने लगा कि चीन को अपनी इस परियोजना के लिए शेष दुनिया से भारी समर्थन मिल रहा है। हालांकि भारत ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया, क्योंकि 'चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा' (सीपीआईसी) इसी बड़ी योजना का हिस्सा बताया गया है, जो जम्मू–कश्मीर के उस हिस्से में बनाया जा रहा है, जिसे पाकिस्तान ने जबरदस्ती अपने कब्जे में लिया हुआ है। अप्रैल 2019 के अंत में जब बीआरआई फोरम का दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया तो हालांकि इस सम्मेलन में पहले सम्मेलन में अपेक्षा कहीं ज्यादा भागीदारी रही, लेकिन इसके साथ ही दुनिया भर से इस परियोजना के संदर्भ में कई प्रश्नचिन्ह भी लगने शुरू हो गए और यही नहीं, चीन का आत्मविश्वास भी पहले के मुकाबले कुछ कम दिखाई दिया। इससे बीआरआई पहल की सफलता की संभावनाओं पर सवालिया निशान लगने शुरू हो गए थे।

श्रीलंका में आये संकट से पूरी दुनिया सकते में हैं। कहा जा रहा है कि श्रीलंका में संकट के पीछे कहीं न कहीं उसका कर्ज है। यह वो कर्ज है जो श्रीलंका ने अपने बंदरगाह और रेल आदि के निर्माण के लिए चीन से लिया था। पहले हम्बनटोटा बंदरगाह के निर्माण हेतु लिए गये ऋण को न चुका पाने के कारण चीन ने उससे वो बंदरगाह ही हथिया लिया और बाद में उसी प्रकार के अन्य ऋणों को चुका ने पाने के कारण वो संप्रभु ऋण के जाल में फंसता चला गया और आज उसकी क्रेडिट रेटिंग इतनी कम हो चुकी है कि उन ऋणों को आगे बढ़ा पाना उसके लिए असंभव हो चुका है। कोरोना काल में पर्यटन से उसकी आमदनी भी खासी कम हो चुकी है, जिससे उसकी मुश्किलें और भी बढ़ गई है।

उसी तरह से केन्या का मोंबासा बंदरगाह भी चीन द्वारा हथिया लिया जाना लगभग तय है। पाकिस्तान के वित्तीय संकट के तार भी किसी न किसी प्रकार से चीन के साथ जुड़े हैं। मालदीव, लाओस, जिबौती (अफ्रीका), मोंटेनेग्रो, मंगोलिया, तज़ाकिस्तान, किर्गिस्तान आदि कई अन्य देश भी चीन की इस कर्ज जाल की कूटनीति का शिकार हो चुके हैं। यह देखते हुए मलेशिया ने अपनी बेल्ट रोड परियोजनाओं को बहुत छोटा कर दिया है।

आने वाले समय में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय ताकतों द्वारा अपने–अपने हितों की रक्षा की रस्साकशी के अंतिम परिणाम के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन माना जा सकता है कि चीन की बेल्ट रोड योजना अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुंच पाएगी, इस बात की संभावनाएं समाप्त होती दिखाई दे रही हैं।

–स्वदेशी संवाद

कुल मिलाकर जहां–जहां चीन की बेल्ट रोड़ परियोजना शुरू हुई थी, वहां–वहां वह योजना पूर्णता प्राप्त करने की स्थिति में नहीं है। इन सभी मुल्कों, जहां सतारूढ़ सरकारों की बेईमानी के चलते मिलीभगत से इन योजनाओं को शुरू तो कर दिया गया, लेकिन वहां की जनता इससे त्रस्त है। इसके कारण कई स्थानों पर इसके खिलाफ आंदोलन शुरू हो चुके हैं।

कर्जजाल कूटनीति के अंतर्गत चीन की बेल्ट रोड़ परियोजना की शुरूआत ही ऐसी परियोजनाओं से की गई, जो आर्थिक दृष्टि से लाभकारी नहीं थे। हेबनटोटा बंदरगाह, एक ऐसा बंदरगाह है जहां परिवहन आवागमन बहुत कम है। पाकिस्तान में जो सीपीईसी के अंतर्गत विद्युत परियोजनायें बनाई गई हैं, उनके द्वारा उत्पादित बिजली के वितरण का ढ़ांचा ही नहीं था, जिसके कारण वह परियोजना लाभप्रद नहीं रही। इसी परियोजना के अंतर्गत बने मार्गों पर आवागमन शुरू ही नहीं हुआ है। लेकिन इन परियोजनाओं के कारण पाकिस्तान पर कुल 90 अरब डालर का विदेशी ऋण बढ़ चुका है, जिसमें से 25 अरब डॉलर तो केवल चीन से ही है। इतने बड़े ऋण को चुका पाना पाकिस्तान के बूते की बात नहीं। नतीजन संप्रभु संकट के चलते उसकी क्रेडिट रेटिंग तो गिरी ही, उनके रूपये की भी दुगर्ति हो चुकी है। आज पाकिस्तान रूपया, 197.6 रूपये प्रति डालर के आसपास पहुंच चुका है।

आज जहां बेल्ट रोड़ परियोजना के कारण संबंधित देश संकट में है, वहीं पूरी दुनिया का चीन के प्रति नजरिया तेजी से बदल रहा है। गौरतलब है कि यूरोप के देशों ने बेल्ट रोड़ योजना को हाथों–हाथ लिया था। लेकिन कोरोना के फैलाव में चीन की भूमिका से संकित देशों की सोच में बदलाव आ रहा है। यहीं नहीं कोरोना के कारण हुए लॉकडाउन और आर्थिक गतिविधियों में व्यवधान के

चीन और यूरोप के बीच कनेक्टीविटी के लिए अब चीन को पुराने मार्ग पर ही आश्रित होना होगा। यानि चीन का रेल कनेक्टीविटी का सपना अब अधूरा ही रह सकता है।

कारण भी इन परियोजनाओं में रूकावट आई है। लेकिन साथ ही साथ चीन और अमरीका के बीच बढ़ती कडुआहत के कारण यूरोप के देशों में भी बीआरआई के प्रति रूझान बदल रहा है।

युद्ध और बीआरआई

समझना होगा कि चीन समर्थित बेल्ट रोड़ परियोजना के माध्यम से जहां पूरी दुनिया को रेल, रोड़ और जलमार्ग से जोड़ने ही योजना चल रही है, इसके साथ ही कई अन्य परियोजनाओं का भी प्रारंभ हो चुका है। इनमें यूरोपीय संघ की 'ग्लोबल गेटवे', अमरीकी नेतृत्व में ब्लूडॉट नेटवर्क (बीडीएन), जी–7 देशों द्वारा संचालित 'बिल्ड बैक बैटर वर्ड' (बी3डब्ल्यू), जापान का क्वालिटी इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट (क्यूआईआई), रूस का युरोएशिया इक्नॉमिक यूनियन (ईएईयू) और भारत, रूस, ईरान द्वारा समर्पित इंटरनेशनल नार्थ साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर आदि शामिल हैं।

यह सही है कि अफ्रीका, एशिया और यूरोप के भूगोल पर केन्द्रित, चीन समर्थित बेल्ट रोड़ परियोजना इस समय दुनिया की सबसे बड़ी परियोजना है, जिसमें 142 देश शामिल है। लेकिन रूस–यूक्रेन युद्ध के चलते तेजी से बदलते अंतर्राष्ट्रीय समीकरणों के कारण इस परियोजना और अन्य परियोजनाओं पर भारी असर पड़ सकता है। चीन के लिए रूस की भूमि यूरोपीय बाजारों के लिए सबसे अधिक विश्वसनीय मार्ग था। रूस, यूक्रेन, पौलेंड, बेलारूस आदि बेल्ट रोड़ की रेल योजना का बहुत बड़ा हिस्सा थे। रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण इस योजना पर ग्रहण लग सकता है। अमरीका और चीन के बीच बढ़ती तनातनी के कारण चीन और 17 मध्य एवं पूर्वी यूरोपीय देशों वाला बेल्ट रोड़ सहयोग मंच पहले से ही मुश्किल में पड़ चुका है। और अब रूस और यूरोपीय देशों के बीच बढ़ते तनाव के चलते इस मंच को ओर अधिक धक्का लग सकता है। चीन और यूरोप के बीच कनेक्टीविटी के लिए अब चीन को पुराने मार्ग पर ही आश्रित होना होगा। यानि चीन का रेल कनेक्टीविटी का सपना अब अधूरा ही रह सकता है।

यह भी सम्भव है कि रूस पर अमरीकी प्रतिबंधों और अमरीका के अन्य कदमों से प्रभावित रूस भी चीन की तरफ कदम बढ़ा सकता है, जिसका अमरीका को भी खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। उधर रूस और भारत की दोस्ती दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण है। अल्पकाल में यह संभव है कि रूस को मास्टर कार्ड और वीजा के जाने के बाद चीन के युनियन पे पर भरोसा करना पड़े, लेकिन दीर्घकाल में रूस द्वारा ईएईयू इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजना को आगे बढ़ाया जाना सम्भव है; और चीन की हिस्सेदारी उसमें भी महत्वपूर्ण होगी। यूरोपीय देश यह समझते हैं कि चीन उनके लिए खतरा बन सकता है। ऐसे में चीन की बेल्ट रोड योजना की सफलता को रोकना उनके लिए महत्वपूर्ण होगा। आने वाले समय में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय ताकतों द्वारा अपने–अपने हितों की रक्षा की रस्साकशी के अंतिम परिणाम के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, लेकिन माना जा सकता है कि चीन की बेल्ट रोड योजना अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुंच पाएगी, इस बात की संभावनाएं समाप्त होती दिखाई दे रही हैं। ❑❑

डिजिटल लेन-देन से बढ़ती आत्मनिर्भरता

किसी ने ठीक ही कहा है कि सही दिशा में लिए गए छोटे–छोटे कदम आपके जीवन के सबसे बड़े कदम बन सकते हैं। किसे मालूम था कि मार्च 2012 में प्रक्षेपित रूपे–कार्ड भारत में आने वाली अंकीय क्रांति का उद्घोष साबित होगी। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय सेवाओं के विस्तार के लिए लिया गया यह कदम आने वाले सालों में मिल का पत्थर साबित होगा, जिसे हटाने के लिए विकसित देशों को एकजूट होना पड़ रहा है।

इसकी सफलता ने भारत में अंकीय लेन–देन के नए तरीकों का अविष्कार कर दिया और आज हम भारत में यूपीआई, आईएमपीएस, क्यूआर कोड़ जैसे शीघ्रतम व्यवस्थाओं से क्षण मात्र में पैसे का आदान–प्रदान कर सकते है।

अंकीय लेन–देन का अभिरूप क्या है

कोई भी अंतरण विधि जिससे मूल्यों का आदान प्रदान एक भुगतान खाता से दुसरे भुगतान खाते में हो जाए, जिसमें अंकीय प्रणाली का इस्तेमाल हो, जैसे यूपीआई, आरटीजीएस, एनईएफटी, आईएमपीएस, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड इत्यादि।

अंकीय लेन–देन के फायदे

- अंकीय भंडारण की लागत बहुत कम होती है, जबकि भौतिक मुद्रा के परिचालन में काफी खर्च होता है।
- अंकीय लेन–देन में टूट–फूट का खर्च नहीं होता है, जो कि भौतिक मुद्रा में लगता है।
- अंकीय लेन–देन में फर्ज़ी मुद्रा के परिचालन की संभावना समाप्त हो जाती है।
- अंकीय लेन–देन में व्यक्ति अपने घर बैठे दूर–दराज स्थान से वित्तीय सेवाएं प्राप्त कर सकता है, वो भी न्यूनतम मूल्य पर।
- अंकीय लेन–देन में यह पहचान कर पाना आसान है कि मूल्य का सही लाभार्थी कौन है और इस तरह हम काला धन को समाप्त कर सकते है।

आज भारत के रूपे कार्ड को विश्व भर में गौरव और सम्मान के साथ अपनाया जा रहा है। भारत द्वारा सृजित यूपीआई तथा आईएमपीएस को वित्तीय स्थानांतरण का सबसे उन्नत तकनीक माना जा रहा है।

– विकास सिन्हा

भारत में अंकीय लेन–देन की सफल गाथा

बीते आर्थिक वर्ष में हमारे देश ने 7422 करोड़ अंकीय लेन–देन दर्ज किया गया, जो कि 33 प्रतिशत वृद्धि का संकेत देता है तथा पूरे विश्व में सबसे अधिक है। ये अपने आपमें एक मिसाल है और सूचित करता है कि जब हमने एक बार ठान लिया तो हमसे आगे कोई नहीं हो सकता है।

एसीआई वर्ल्डवाईड के मार्च 2021 की रिपोर्ट के मुताबिक़ भारत अंकीय लेन–देन में 2019 से विश्व में सबसे अग्रणी देश है तथा वास्तविक समय लेन–देन (रियल टाईम ट्रांजेक्शन) में हम चीन तथा दक्षिण कोरिया जैसे देशों को पछाड़ते हुए प्रथम स्थान पर है।

पिछले साल के मुक़ाबले इस साल यूपीआई लेन देन में संख्या तथा मात्रा में 100 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी है।

भारत में आधारित तथा भारत में विकसित रूपे कार्ड 62 करोड़ से अधिक लोगों को प्रचालित किया जा चुका है और आज डेबिट तथा क्रेडिट कार्ड के क्षेत्र में भारत में इसकी मार्किट हिस्सेदारी 60 फीसदी से अधिक है।

यूपीआई (यूनिक पेयमेंट इंटरफेस) लोगों के लिए लेन–देन की पहली पसंद बन गया है, बीते मई माह में लोगो ने यूपीआई का प्रयोग करके 10 लाख करोड़ रूपए से अधिक का लेन–देन कर एक नया कीर्तिमान बना दिया।

आज ग्रामीण इलाकों में लोग आधार कार्ड को अपने बैंक खाते से लिंक करके एईपीएस लेन–देन कर रहे है।

कुछ रोचक तथ्य

- कोरोना महामारी के बाद लोगों में अंकीय लेन–देन की प्रवृति बढ़ती दिखी है, पहले जहां मुख्यतः नौजवान इस माध्यम का इस्तेमाल करते थे। महामारी के बाद अधेड़ अवस्था तथा कुछ हद तक वृद्धावस्था वाले लोगों ने इसको प्रयोग में लाना शुरू किया।
- सर्वे के अनुसार यह पाया गया है की सामजिक सुरक्षा के अंतर्गत अंकीय रूप से प्राप्त हुए मूल्य का इस्तेमाल लाभार्थी भी अंकीय लेन देन से ही करते है
- अंकीय लेन देन का सबसे अधिक इस्तेमाल शॉपिंग के लिए किया जाता है।
- 50 प्रतिशत से अधिक व्यस्क लोग अंगीय लेन–देन के आने से अब मात्र 30 दिनों में आसानी से ऋण पा सकने में सक्षम है।
- आज 100 करोड़ से अधिक डेबिट और क्रेडिट कार्ड प्रचलन में है, जिसमें 93 प्रतिशत हिस्सा एटीएम कार्ड का है। हालांकि औसत टिकट आकार क्रेडिट कार्ड का डेबिट कार्ड के मुक़ाबले तीन गुना है।

अंकीय लेन–देन के दुष्प्रभाव

यद्यपि अंकीय लेन–देन के फायदे बहुत है, परन्तु इसके कुछ दुष्प्रभाव भी है।

आइडेंटिटी थेफ्टः यानी पहचान की चोरी किसी अन्य व्यक्ति की व्यक्तिगत या वित्तीय जानकारी प्राप्त करने का अपराध है, जिससे कि अवैध लेनदेन या खरीदारी जैसे अपराध किए जा सकें।

अभिगम्यताः भारत जैसे विकासशील देश में जहां आधी आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में वास करती है और गावों में आधारभूत संरचना मौजूद नहीं है, वहाँ अंकीय लेनदेन, जिसमें दूरसंचार का इस्तेमाल होता है, लोगों तक मुहैया कराना काफी मुश्किल कार्य है।

व्यक्तिगत संबंध का अभावः अंकीय लेनदेन संचार पर आधारित है, जिसमें भौतिक तौर पर मनुष्य की जरूरत नहीं होती है और इससे व्यग्तिगत संबध का अभाव होता है और इससे समस्याओं के समाधान में देरी होती है।

सुझाव

- अंकीय लेनदेन जिस रफ़्तार से बढ़ रही है, उन पर लगने वाले नियम कानून में भी उतनी ही तेजी से बदलाव करना होगा। समय–समय पर उनकी समीक्षा करनी पड़ेगी।
- अंकीय लेनदेन में बढ़ते हुए धोखाधड़ी की वारदातों को देखते हुए सरकार को तथा नियामक संस्थाओं द्वारा लोगों में जागरूकता लाने की भरसक कोशिश करनी चाहिए।
- अंकीय लेनदेन में आने वाले खर्चे को न्यूनतन स्तर पर लाने का प्रयास करना चाहिए। जिससे कि ये सेवाएं ग्रामीण एवं सुदूर इलाकों तक आसानी से पहुंचायी जा सके।

अंतिम लेकिन समाप्ति नहीं

भारत ने जिस तरह अंकीय लेनदेन में अपनी आत्मनिर्भरता साबित की है, उससे पूरी दुनिया अचम्भे में है, इतने कम लागत में इतनी उन्नत अंकीय वित्तीय सेवाओं को प्रदान कर पाना पूरे दुनिया को एक सबक देता है कि हम भारतीय किसी से कम नहीं है।

आज भारत के रूपे कार्ड को विश्व भर में गौरव और सम्मान के साथ अपनाया जा रहा है। भारत द्वारा सृजित यूपीआई तथा आईएमपीएस को वित्तीय स्थानांतरण का सबसे उन्नत तकनीक माना जा रहा है।

इस भारतीय प्रणाली की सफलता को देखकर इसे न केवल देश के भीतर बल्कि अंतर्देशीय मूल्य स्थानांतरण में भी इस्तेमाल करने की कोशिश की जा रही है। भारत, सिंगापुर तथा कुछ अन्य राष्ट्रों के सहयोग से इस पर शोध कर रहा है और किसे पता हम स्विफ्ट जैसे एकान्तर अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय लेनदेन प्रणाली का प्रारूप बनकर सामने आएं। आत्मनिर्भरता सर्वांगीण सफलता प्राप्ति का महामंत्र है। ❑❑

विकास सिन्हा, वसंत कुंज, नई दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

योग से महिलाएं भी रहे निरोग

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।

जहां नारी की पूजा होती है अर्थात स्त्रियों का सम्मान किया जाता है, वहां पर देवता निवास करते हैं अर्थात उस कुल के सभी कार्य संपन्न हो जाते है। भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है–नारी!

भगवान ने नारी को भावनात्मक रूप से बहुत दृढ़ बनाया है कि उसमें पीढ़ा सहकर एक नए जीव को जन्म देने की अद्‌भुत क्षमता होती है। और दूसरी ओर उसमें अभिव्यक्ति के माध्य म से अपनी संतान को समझने वाली संवेदनशील भावना भी है। परंतु दुर्भाग्यपूर्ण है कि परिवार में व्यस्त महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं रह पातीं। महिलाएं शारीरिक रूप से बहुत संवेदनशील होती हैं। प्रकृति ने उनको अपनों की देखभाल करने के लिए ही बनाया है इसलिए महिलाओं का हृदय प्रेम, दया, संवेदना और अनुभूति का सागर है। इसी कारण से उनके जीवन में योग का बहुत महत्व है। आधुनिक समय में महिलाएं अपने व्यवसाय, जीविका और परिवार दोनों का दायित्व बहुत सुंदरता से निभा रही हैँ इसलिए, जीवन के सभी पहलुओं को संतुलित करने में सक्षम होने के लिए और अपने ऊपर कार्य का अधिक बोझ होने पर भी शांत रहने के लिए योगाभ्यास आवश्यक हो जाता है। परिवार और घर का प्रबंधन करते समय उन्हें मानसिक और शारीरिक समस्याएं, जीवनशैली से जुड़ी समस्याएं, हार्मोनल एवं थायराइड विकार, स्थूलता, तनाव,उत्कंठा और व्यग्रता हो सकती है। मन, शरीर और आत्मा के संतुलन को बनाए रखने के लिए योगाभ्यास करना आवश्यक है। यह जीवन के सभी पहलुओं में संतुलन लाने में मदद करता है। योग किसी के भी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है, जो महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। महिलाओं को परिवार चलाने में तनाव का सामना करना पड़ता है, और कुछ महिलाओं को तो अपने व्यावसायिक और पारिवारिक जीवन दोनों में समन्वय स्थापित करना पड़ता है। एक शोध के अनुसार महिलाओं में पुरुषों की तुलना में ज्यादा अवसाद और तनाव देखा गया है। समाज और परिवार का भी कर्तव्य है कि हमारी मातृशक्ति स्वस्थ रहे।

योग किसी के भी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है, जो महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है।
–विनोद जौहरी

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को भारत की पहल और सुझाव के बाद विश्व भर में मनाया जाता है। योग एक प्राचीन भारतीय प्रथा है जो शारीरिक मुद्राओं, श्वसन विधियों और ध्यान को समन्वित करती है। योग में विभिन्न प्रकार के प्राणायाम और कपाल–भाति जैसी योग क्रियाएं शामिल हैं, जो सबसे ज्यादा प्रभावी सांस की क्रियाएं हैं। इनका नियमित अभ्यास करने से लोगों को सांस संबंधी समस्याओं और उच्च व निम्न रक्तदाब जैसी बीमारियों में आराम मिलता है। योग का प्रतिदिन नियमित रुप से अभ्यास किया जाए, तो यह बीमारियों से धीरे–धीरे छुटकारा पाने में काफी सहायता करता है। यह हमारे शरीर में कई सकारात्मक बदलाव लाता है और शरीर के अंगों की प्रक्रियाओं को भी नियमित करता है। विशेष प्रकार के योग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किए जाते हैं।

व्यावसायिक जीवनमें काम के दीर्घ कालांश और अपने परिवार की देखरेख का अतिरिक्त दबाव महिलाओं के भावनात्मक स्वास्थ्य, फिटनेस के स्तर और नींद के चक्र को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। योग इन सभी चीजों को वापस सामान्य होने में मदद करता है। कुछ योगासन जो व्याकुलता, व्यग्रताॉ अवसाद और तनाव से संबंधित समस्याओं से निपटने में मदद कर सकते हैं, वे हैं– बालासन, वृक्षासन, और मत्स्यासन।

एंडोक्राइनल चक्र

शरीर की एंडोक्राइनल पद्धति बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि सभी हार्मोन स्राव इस सिस्टरम के माध्यम से नियंत्रित और स्रावित होते हैं। योग आसन एंडोक्राइनल चक्र को व्यवस्थित और नियमित करते हैं। सभी योग आसन वजन कम करने में मददगार होते हैं।

मेटाबॉल्जिम (चयापचय) में सुधार

'सर्वांगासन' थायरॉयड और पैराथायरॉयड ग्रंथि को उत्तेजित और मेटाबॉल्जिम में सुधार करता है। महिलाओं में हार्मोंस के बदलाव से होने वाली समस्याएं आम है लेकिन इसे हल्के में लेना भी उचित नहीं है। मासिक धर्म के समय होने वाली समस्याएं जैसे अनियमित चक्र, पेट में होने वाली ऐंठन या मरोड़ और शरीर में ऊर्जा की समस्या को दूर करने में योग से काफी सहायता मिलती है। नियमित योग के अभ्यास से अनिद्रा, चिंता, अवसाद और स्वभाव में बेचैनी जैसी परेशानियों से राहत मिलती है।

योग निद्राचक्र को नियंत्रित करता है

पर्याप्त नींद के बिना, कोई भी व्यक्ति अपने उच्चतम स्तर पर कार्य नहीं कर सकता है, और सिद्धासन, विपरीत करिणी और सुप्तअर्ध दंडासन जैसे योग हमारे नींद चक्र, नींद की गुणवत्ता और अनिद्रा को दूर करने में मदद करते हैं।

रजोनिवृत्ति का समाधान

रजोनिवृत्ति एक ऐसी अवस्था है जो महिला के प्रजनन चक्र के अंत का संकेत देती है और यह महिलाओं के लिए कठिन चरण है, क्योंकि इसमें कई प्रकार के हार्मोनल परिवर्तन भी होते हैं जो समस्याएं पैदा कर सकते हैं। थकावट, मूड में उतार–चढ़ाव और दर्द कुछ ऐसी समस्याएं हैं जिनसे महिलाओं को जूझना पड़ता है। यहां योग उपचार की भूमिका निभाता है ताकि महिलाएं इन मनोवैज्ञानिक और शारीरिक परिवर्तनों से निपट सकें। रजोनिवृत्ति एक बदलाव वाला चरण है, लेकिन इससे प्रभावी ढंग से निपटने में योग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कुछ आसन जो इस अवधि के दौरान मदद कर सकते हैं वे हैं मार्जरी आसन, अंजनेयासन और भुजंगासन। योग हार्मोन को संतुलित करने और महिला को शांत रखने और उनकी समस्याओं से निपटने के लिए तैयार करने में भी मदद करता है।

इनके अलावा, ऐसे कई आसन हैं जो माइग्रेन, थायराइड और पीठ दर्द के लक्षणों को कम करने में मदद करते हैं, जो एक सामान्य बीमारी है जिससे सभी उम्र की महिलाएं पीड़ित होती हैं। माइग्रेन के लिए सुझाए गए आसन अधोमुखासवन आसन और प्रसरितापद्दोत्तन आसन (पैर को चौड़ा करके आगे की ओर झुकना) हैं। थायराइड ग्रंथि को संतुलित करके अच्छे स्वास्थ्य के लिए, सर्वांगासन और धनुरासन (हल वाली मुद्रा) कर सकते हैं। पीठ दर्द को कम करने के लिए भुजंगासन और सलंब भुजंगासन को सबसे प्रभावी पाया गया है।

योग– महिलाओं के चरम प्रजनन समय के लिए उत्तम

वर्तमान में यह देखा जा रहा है की आधुनिक जीवन शैली, कामकाजी महिलाओं में व्यस्तता, मानसिक उद्विग्नता आदि के कारण प्रजनन क्षमता में क्षीणता आई है। इसी कारण से आईवीएफ (इन विटरो फर्टिलाइजशन–महिला प्रजनन संबंधी) क्लीनिक हर गली मोहल्ले में खुल गए है। नवजात शिशुओं को गोद लेने के लिए लंबी कतार है। महिलाएं गर्भ धारण तथा मां बनने के समय पर बहुत सारे शारीरिक बदलावों से गुजरती हैं। योग से महिलाओं का प्रजनन स्तर अच्छा हो जाता है। यह आवश्यक है कि वह इस समय पर अच्छा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करें। इस समय पर बहुत से हार्मोन परिवर्तन होते हैं, जिनको कई बार रोकना कठिन होता है। विशेषज्ञ इस समय पर कुछ विशेष आसनों को करने की सलाह देते हैं, जो कि उनको शारीरिक और भावनात्मक स्तर पर स्वस्थ रख सकें।

शारीरिक आवश्यकता और क्षमताओं के अनुसार शरीर को तैयार करने में पूर्व प्रसव योग बहुत लाभदायक है। इससे महिलाओं की गर्भाशय की मांसपेशियां मजबूत हो जाती हैं तथा रीढ़ की हड्डी अतिरिक्त दबाव झेलने के लिए मजबूत हो जाती है। प्रसव पूर्व योग करने से प्राणायाम और यौगिक श्वासों के द्वारा महिलाएं जल्दी ही प्रसव की पीड़ा से बाहर निकल जाती हैं। मांसपेशियों में जल्दी मजबूती आ जाती है तथा स्तनपान कराने में वृद्धि हो जाती है।

योग सर्व सुलभ है। स्वामी रामदेव, इस्कॉन, श्री श्री रवि शंकर, मोरारजी देसाई योग संस्थान और बहुत से सरकारी, स्वयंसेवी संस्थान योग प्रशिक्षण उपलब्ध करा रहे है। टेलिविजन पर विभिन्न चेनेल प्रतिदिन प्रातः योग का प्रशिक्षण देते हैं। हर जगह पार्कों में स्वयं सिद्ध योग शिक्षक सभी को योग सिखाते हैं। परिवार के सभी सदस्यों का कर्त्तव्य है कि माताओं, बहनों, अर्धांगिनी का स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए उनको यथायोग्य योग प्रशिक्षण उपलब्ध कराएं। ❑❑

स्वावलंबी भारत अभियान यानि रोजगारयुक्त भारत

स्वावलंबी भारत अभियान के तत्वावधान में हरिदर्शन नगर में बैठक हुई। स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय सह विचार प्रमुख डॉ. राजीव कुमार ने कहा कि स्वदेशी जागरण मंच ने अन्य संगठनों के साथ मिलकर देश को पूरी तरह से रोजग़ारयुक्त बनाने का संकल्प लिया है। इस गैर–सरकारी पहल का नाम ही स्वावलम्बी भारत अभियान है। उन्होंने कहा कि देश को रोजगारयुक्त बनाने के लिए उन्होंने चार आधारभूत मंत्र माने हैं। जो विकेंद्रीकरण, सहकारिता, स्वरोजगार या उद्यमिता तथा स्वदेशी का आग्रह हैं। प्रांत सह संयोजक मनोज अग्रवाल ने कहा कि स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत कई संगठन मिलकर कार्य कर रहे हैं। जिला संयोजक सुशील चौहान, राहुल राठौर, शैलेंद्र चौहान, सुधीर चौहान, देवेश चौहान, अतुल पांडे, सत्येंद्र चौहान, मोहित चौहान, डॉ. अरुण चौहान, डॉ. अरुण भदौरिया, अशोक चौहान, अजय शुक्ला, वीरभान सिंह, केशव सिंह, विजयप्रताप सिंह, डॉ. सत्यप्रकाश, डॉ. विमल पांडेय, डॉ. कुशलेंद्र, कुलवीर, शिवा गुप्ता मौजूद रहे।

https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/agra/desh-ko-pooree-tarah-banaenge-rojagaar-yukt-mainpuri-news-agr5376515121

देश से बाहर आटा भेजने पर सख्ती

रूस–यूक्रेन के बीच युद्ध की वजह से दुनिया खाद्यान्न संकट से जूझ रही है। पूरी दुनिया में अनाज के दाम बढ़ रहे हैं। ये हालत भारत में ना हो जाए, इसके लिए सरकार एहतियाती कदम उठा रही है।

विदेश व्यापार महानिदेशालय यानि डीजीएफटी ने अपने नोटिफिकेशन में जानकारी दी है कि किसी भी कंपनी को आटा निर्यात करने से पहले मंजूरी लेनी होगी। बिना अंतर–मंत्रालयी समिति की अनुमति के कोई भी कंपनी विदेश में आटा नहीं भेज पाएगी। यह आदेश आटे के साथ

साथ मैदा, सूजी (रवा/सिरगी), होलमील आटा और रिजल्टेंट आटा के निर्यात पर भी लागू होगा। यानी इन्हें भी विदेश भेजने से पहले मंजूरी लेने की जरुरत पड़ेगी।

भारत सरकार ने मई के महीने में गेहूं के निर्यात पर पाबंदी लगा दी थी। क्योंकि पूरी दुनिया में गेहूं की किल्लत होती जा रही थी। ऐसे में देश में भी गेहूं की कीमत ना बढ़ जाए, इस आशंका से सरकार ने गेहूं के निर्यात पर पाबंदी लगाई थी। लेकिन पिछले दो महीनों में आटे का निर्यात बेहद तेजी से बढ़ गया था। क्योंकि आटा के निर्यात पर कोई प्रतिबंध नहीं था। यही नीति मैदा, सूजी और दूसरे तरह के सभी पिसे हुए गेहूं के उत्पादों पर भी लागू होती थी। लेकिन आटा का निर्यात बढ़ने की वजह से सरकार के कान खड़े हुए। क्योंकि इसकी वह से गेहूं के निर्यात का प्रतिबंध अप्रभावी साबित हो रहा था।

इसी वजह से सरकार ने आटे के निर्यात पर भी नजर रखने का फैसला किया। अब विदेश में आटा भेजने से पहले अंतर मंत्रालयी समिति की सिफारिश जरुरी हो गई है।

हालांकि भारत ने 13 मई से ही गेहूं के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके बावजूद दुनिया जिन देशों में हालात बिगड़ रहे हैं वहां गेहूं का निर्यात लगातार जारी है। पाबंदी के बावजूद भारत ने लगभग एक दर्जन देशों को 18 लाख टन गेहूं का निर्यात किया है। 22 जून तक सरकार ने अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, इजरायल, इंडोनेशिया, मलेशिया, नेपाल, ओमान, फिलीपींस, कतर, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, सूडान, स्विट्जरलैण्ड, थाईलैण्ड, संयुक्त अरब अमीरात, वियतनाम और यमन को चार गुना गेहूं का निर्यात किया है।

फरवरी 2022 से शुरु हुई रूस–यूक्रेन की जंग थमने का नाम नहीं ले रही है। जिसकी वजह से गेहूं की वैश्विक सप्लाई चेन पर भारी असर पड़ा है। रूस और यूक्रेन दोनों ही गेहूं के बड़े उत्पादक देश हैं। उन दोनों के जंग में उलझने की वजह से दुनिया के कई देशों के सामने खाद्यान्न संकट पैदा हो गया है। ऐसे में भारत ने अपनी घरेलू जरुरतों को पूरा करने के बाद बचा हुआ गेहूं जरुरतमंद देशों को भेजने की नीति अपना रखी है। दुनिया में गेहूं की कीमत में लगभग 50 फीसदी का इजाफा हुआ है।

http://www.udayindiahindi.in/archives/38770

दिल्ली के ग्यारह जिलों में खुले स्वरोजगार केंद्र

स्वालंबी भारत अभियान के तहत स्वदेशी जागरण मंच ने दिल्ली के 11 जिलों में स्वरोजगार केंद्र बनाए हैं। इस संबंध में स्वदेशी जागरण मंच दिल्ली के प्रांत संयोजक विकास चौधरी ने बताया कि इस अभियान के तीन मुख्य

उद्देश्य हैं जिसमें भारत मे कोई भी व्यक्ति गरीबी रेखा से नीचे न हो, भारत 100 प्रतिशत रोजगार व स्वरोजगार युक्त हो और देश की अर्थव्यवस्था वर्ष 2030 तक 10 ट्रिलियन डालर की हो। उन्होंने बताया कि इस अभियन के दिल्ली प्रांत समन्वयक सत्यवान गर्ग होंगे। इसको लेकर हाल ही में दिल्ली स्थित भारतीय मजदूर संघ कार्यालय में संघ के 11 संगठनों के साथ एक बैठक भी हुई थी जिसमे अभियान को अमलीजामा पहनाने के ऊपर चर्चा हुई। साथ ही अभियान की रणनीति तय हुई।

विकास चौधरी ने बताया कि दिल्ली के 11 सरकारी जिलों में अपने केंद्र खोल दिए हैं, जिसमे वह युवाओं व ऐसे व्यक्ति जिनके पास कोई रोजगार नहीं है उनको रोजगार मुहैया करने में मदद करेंगे व स्वरोजगारिता के लिए अग्रसर कर उनका हाथ बटाएंगे।

https://www.jagran.com/delhi/new-delhi-city-ncr-swadeshi-jagran-manch-has-set-up-self-employment-centers-in-11-districts-of-delhi-22810623.html

स्टार्टअप को नहीं होगी फंड की कमी, शुरु होगा इन्वेस्टर्स पोर्टल

देश में स्टार्टअप को लेकर जो तेजी दिखी है उसके मद्देनजर अभी से ही इसकी तैयारी शुरू हो गई है कि नए स्टार्टअप को फंड के लिए भटकना नहीं पड़े। जल्द ही एक ऐसा पोर्टल लांच किया जा रहा है जिस पर स्टार्टअप और निवेशक दोनों मौजूद होंगे और आपस में बातचीत का रास्ता आसान होगा। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय की पहल पर भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) इस पोर्टल को विकसित कर रहा है। मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि अगले दो महीने में इस पोर्टल को लांच किया जा सकता है। फिलहाल इस पोर्टल पर घरेलू निवेशक उपलब्ध होंगे, लेकिन बाद में विदेशी निवेशकों को भी इस पोर्टल पर जगह दी जा सकती है। इस पोर्टल से विभिन्न मंत्रालय और विभाग भी जुड़े होंगे और स्टार्टअप का आइडिया पसंद आने पर विभाग उस आइडिया को अपना सकता है।

अभी स्टार्टअप की फंडिंग के लिए सरकार की तरफ से फंड आफ फंड्स, स्टार्टअप सीड फंड है। फंड आफ फंड्स से 660 स्टार्टअप को 9500 करोड़ रुपये की सहायता दी जा चुकी है। स्टार्टअप इंडिया सीड फंड से 99 इनक्यूबेटर्स को 365 करोड़ रुपये की सहायता दी गई है। सरकार की तरफ से स्टार्टअप को तीन साल के लिए टैक्स में भी छूट दी गई है।

वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय के मुताबिक 16 जनवरी, 2016 में स्टार्टअप इंडिया की शुरुआत की गई थी और मात्र छह साल में देशभर में 72,000 से अधिक स्टार्टअप की स्थापना हो चुकी है। 50 प्रतिशत स्टार्टअप में महिला निदेशक के रूप में काम रही हैं। 72,000 स्टार्टअप में 7.5 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिला है। औसतन एक स्टार्टअप में 11 लोगों को नौकरी मिली है। सबसे बड़ी बात है कि देश के सभी राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों में स्टार्टअप है।

अधिकारियों के मुताबिक 50 प्रतिशत स्टार्टअप छोटे शहरों में हैं और फंड के लिए चयन में छोटे शहरों के स्टार्टअप को प्राथमिकता दी जा रही है। भारत में अब तक 103 यूनिकार्न (एक अरब डालर के मूल्यांकन वाले) की स्थापना हो चुकी है। यूनिकार्न की स्थापना में भारत सिर्फ अमेरिका और चीन से पीछे है। स्टार्टअप की स्थापना के प्रोत्साहन के लिए राज्यों की रैाकग भी तीन साल से की जा रही है। फिलहाल गुजरात और कर्नाटक स्टार्टअप इकोसिस्टम में सबसे आगे हैं।

https://www.jagran.com/business/biz-startups-will-not-face-shortage-of-funds-investors-portal-will-start-22875662.html

कोरोना के कहर के बावजूद भारतीय इकोनॉमी में तेजी

कोरोना की 3 लहरों को झेलने के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था ने जोरदार वापसी की है। साल 2021 में कोरोना की दूसरी लहर से इंडियन इकोनॉमी पर ज्यादा असर पड़ा था। इसकी वजह से इसके आर्थिक सुधार में देरी हुई।

अमेरिका के ट्रेजरी डिपार्टमेंट ने अपनी एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें उसने भारत में तेजी से हुए वैक्सीनेशन की तारीफ करते हुए कहा कि भारत के वैक्सीनेशन रोलआउट में तेजी आने के साथ ही साल के दूसरी छमाही में इकोनॉमिक एक्टिविटी में जोरदार तेजी आई। साल 2021 के अंत तक 44 प्रतिशत भारतीय आबादी वैक्सीन की दोनों डोज ले चुकी थी। इंडियन इकोनॉमी 2020 में ग्रोथ रेट 7 प्रतिशत तक सिमटने के बाद 2021 के दूसरी तिमाही तक प्री–पैंडेमिक लेवल पर लौट आई और साल 2021 का ग्रोथ रेट 8 प्रतिशत हो गया।

2022 की शुरुआत में, भारत को ओमिक्रॉन वैरिएंट का सामना करना पड़ा। लेकिन इसका असर कम रहा और इससे मरने वाले लोगों की संख्या और आर्थिक गिरावट सीमित रही। भारत सरकार ने 2021 में पैंडेमिक के दौरान

इकोनॉमी को वित्तीय सहायता देना जारी रखा।

ट्रेजरी के मुताबिक रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने रेपो रेट मई 2020 से 4 प्रतिशत रखा और इसमें कोई बदलाव नहीं किया। लेकिन जनवरी 2021 में कोरोना की शुरुआत के दौरान डेवलपमेंट को सपोर्ट करने के लिए डिजाइन किए गए लिक्विडिटी मेजर को खोलना शुरू कर दिया। अनुमान है कि फाइनेंशियल ईयर 2022 में वित्तीय घाटा जीडीपी का 6.9 प्रतिशत पहुंच जाएगा जो पैंडेमिक के पहले से कहीं ज्यादा है।

2004 के बाद पहली बार भारत में साल 2020 में जीडीपी का 1.3 प्रतिशत की करंट अकाउंट ग्रोथ देखी गई। लेकिन 2021 में भारत में फिर से करंट अकाउंट डिफिसिट जीडीपी का 1.1 प्रतिशत हो गया। इसके पीछे की ट्रेड डिफिसिट को माना गया। 2020 में भारत का ट्रेड डिफिसिट 95 बिलियन डॉलर (करीब 7.43 लाख करोड़ रुपए) था जो 2021 में बढ़कर 177 बिलियन डॉलर (करीब 13.84 लाख करोड़ रुपए) पर पहुंच गया।

2021 में साल दर साल भारत का इंपोर्ट बढ़कर 54 प्रतिशत पहुंच गया, जबकि एक्सपोर्ट 43 प्रतिशत रहा। भारत का सर्विस ट्रेड ग्रोथ (जीडीपी का 3.3 प्रतिशत) और इनकम ग्रोथ (जीडीपी का 1.3 प्रतिशत) गुड्स ट्रेड डिफिसिट ने मामूली रूप से भरपाई की। 2021 में रेमिटेंस करीब 5 प्रतिशत बढ़कर 87 बिलियन डॉलर (6.79 लाख करोड़ रुपए) पहुंच गया, यह जीडीपी का 2.8 प्रतिशत था।

भारत का अमेरिका के साथ बाइलेटरल ट्रेड ग्रोथ पिछले साल काफी बढ़ा है। 2013 और 2020 के दौरान भारत और अमेरिका के बीच करीब 30 बिलियन डॉलर(2.34 लाख करोड़ रुपए) का बाइलेटरल गुड्स और सर्विस ट्रेड ग्रोथ रहा। यह 2021 में 45 बिलियन डॉलर (3.5 लाख करोड़ रुपए) तक पहुंच गया। 2021 में भारत का बाइलेटरल गुड्स ट्रेड ग्रोथ 33 बिलियन डॉलर (2.5 लाख करोड़ रुपए) पहुंच गया और बाइलेटरल सर्विस ग्रोथ 12 बिलियन डॉलर (94 हजार करोड़) पहुंच गया।

https://money.bhaskar.com/business/news/india-economy-is-recovering-faster-than-expected-129921357.html

स्वदेशी चिट्ठी

भारत का बढ़ता कद

इंग्लैंड के प्रधानमंत्री पद पर एक भारतीय के बैठने की प्रबल संभावना है। यह संयोग है या भारतीयों की विश्व में बढ़ती साख कि पिछले दिनों जब इंग्लैंड के प्रधानमंत्री जॉनसन ने इस्तीफा दे दिया तो उसके पश्चात पिछले मंत्रिमंडल में वित्तमंत्री रहे ऋषि सुनक अब प्रधानमंत्री की रेस में सबसे आगे हैं। वह इंफोसिस कंपनी के मुखिया नारायण मूर्ति के दामाद भी हैं। यदि यह सच हो जाता है तो विश्व में आश्चर्यजनक घटना होगी कि जिस इंग्लैंड ने हम पर लगभग 200 साल राज किया, स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में ही उसी इंग्लैंड का प्रधानमंत्री एक भारतीय बनेगा। वैसे भी वे वहां वित्तमंत्री तो हैं ही।

वैसे 2 वर्ष पूर्व अमेरिका के चुनाव में भी वहां की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस मूल भारतीय ही हैं। वैसे अब विश्व में 5 देश ऐसे हैं जिनके मुखिया या उपमुखिया हिंदू हैं। विश्व में कुल 1 करोड़ 80 लाख भारतीय रहते हैं। यह संख्या दुनिया में किसी भी अन्य देश की तुलना में अधिक है। ये भारतीय (NRIs) वहां से 80 अरब डालर प्रति वर्ष भारत भी भेजते हैं और वहां पर भारत के सांस्कृतिक विचार के भी वाहक तो होते ही हैं। जो भी हो भारत विश्व गुरु की अपनी यात्रा पर तेजी से बढ़ रहा है... जय हो!!

— **सतीश कुमार** (अखिल भारतीय सहसंगठक, स्वदेशी जागरण मंच)

वाहन चलने की दूरी के आधार पर ले सकेंगे बीमा

अब वाहन स्वामी अपने वाहन चलने की दूरी के आधार पर मोटर इंश्योरेंस ले सकेंगे। भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडा) ने साधारण बीमा कंपनियों को अतिरिक्त लाभ और व्यापक सुरक्षा कवर की आधुनिक सुविधाएं पेश करने की अनुमति दे दी है। इरडा ने कहा कि यह टेलीमैटिक्स आधारित मोटर बीमा योजनाएं हैं। इसमें प्रीमियम वाहन के उपयोग या गाड़ी चलाने के तरीके पर निर्भर करता है। वाहन बीमा उद्योग में टेलीमैटिक्स ड्राइविंग से संबंधित आंकड़ों पर नजर रखने, उसके भंडारण और अंतरित करने के लिए उपयोगी है। ये आकड़े गाड़ी चलाने के व्यवहार को समझने और उचित वाहन बीमा दरों को तय करने में काम आते हैं। इरडा ने कहा कि वाहन बीमा की धारणा लगातार उभर रही है। तकनीक के साथ नई युवा पीढ़ी की चुनौतीपूर्ण मांग को पूरा करने की गति काफी तेजी से बढ़ी है।

इरडा ने अभी बीमा कंपनियों को 'पे एज यू ड्राइव और 'पे हाऊ यू ड्राइव' के तौर पर अतिरिक्त सुविधाएं देने की

मंजूरी दी है। साधारण बीमा कंपनियां मोटर ओन डैमेज के साथ इन उत्पादों की बिक्री कर सकती हैं। यह वाहन बीमा माडल पालिसी धारकों को अपनी बीमा पालिसी को एक सीमा तक अपने हिसाब से तय करने की अनुमति देता है। इससे प्रीमियम को कम करने में मदद मिलती है। साथ ही इरडा ने एक ही मालिक के कई वाहनों के लिए 'फ्लोटर' नीति की भी अनुमति भी दी है। यह एकल वाहन बीमा योजना है जिसमें कई वाहन शामिल होते हैं।

पालिसीबाजार डाट काम के मोटर इंश्योरेंस रिन्यूअल्स हेड अश्विनी दुबे का कहना है कि कोविड के बाद कई ग्राहक नियम रूप से अपने वाहन नहीं चला पा रहे हैं। इसके बावजूद वे वाहन निर्माण वर्ष और माडल के आधार पर वार्षिक प्रीमियम का भुगतान करते हैं। इरडा के नए नियमों से उन ग्राहकों को फायदा होगा जिनके पास एक से ज्यादा वाहन हैं और वे ज्यादा सफर नहीं करते हैं।

अगर एक व्यक्ति प्रतिमाह अपनी कार 200–300 किमी चलाता है। जबकि दूसरा व्यक्ति अपनी कार 1200–1500 किमी प्रतिमाह चलाता है। मौजूदा नियमों में दोनों को वाहन निर्माण वर्ष और माडल के आधार पर समान प्रीमियम देना होता है। 'पे–एज–यू–ड्राइव' माडल के तहत समान प्रीमियम का भुगतान नहीं करना होगा।

https://www.jagran.com/business/biz-irdai-vehicles-will-be-able-to-take-insurance-on-the-basis-of-walking-distance-irda-allows-general-insurance-companies-to-give-additional-facilities-22868596.html

अमेरिका बना भारत का सबसे बड़ा ट्रेडिंग पार्टनर

अमेरिका 2021–22 में भारत का सबसे बड़ा ट्रेडिंग पार्टनर बन गया है। पहले चीन सबसे बड़ा ट्रेडिंग पार्टनर था। ये दोनों देशों के बीच मजबूत आर्थिक संबंधों को दर्शाता है। ट्रेड एक्सपर्ट्स का मानना है कि आने वाले वर्षों में भी अमेरिका के साथ बाइलेटरल ट्रेड बढ़ने का सिलसिला जारी रहेगा क्योंकि भारत और अमेरिका अपने आर्थिक संबंधों को और मजबूत करने में लगे हैं।

कॉमर्स मिनिस्ट्री के आंकड़ों के मुताबिक 2021–22 में अमेरिका और भारत के बीच बाइलेटरल ट्रेड 119.42 अरब डॉलर रहा। 2020–21 में यह 80.51 अरब डॉलर था। अमेरिका को निर्यात 2021–22 में बढ़कर 76.11 अरब डॉलर हो गया, जो पिछले वित्त वर्ष में 51.62 अरब डॉलर था। 2020–21 में लगभग 29 अरब डॉलर की तुलना में आयात बढ़कर 43.31 अरब डॉलर हो गया।

आंकड़ों से पता चलता है कि 2021–22 के दौरान, चीन के साथ भारत का बाइलेटरल ट्रेड 115.42 अरब डॉलर हो गया जो 2020–21 में 86.4 अरब डॉलर था। चीन को 2020–21 में 21.18 अरब डॉलर का निर्यात किया। पिछले वित्त वर्ष में ये 21.25 अरब डॉलर था। वहीं 2021–22 में आयात लगभग 65.21 अरब डॉलर से बढ़कर 94.16 अरब डॉलर हो गया। 2021–22 में ट्रेड गैप बढ़कर 72.91 अरब डॉलर हो गया, जो पिछले वित्त वर्ष में 44 अरब डॉलर था।

फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट आर्गनाइजेशन के वाइस प्रेसिडेंट खालिद खान ने कहा 'भारत एक ट्रस्टेड ट्रेडिंग पार्टनर के रूप में उभर रहा है और ग्लोबल कंपनियां अपनी सप्लाई के लिए चीन पर निर्भरता कम कर रही हैं और भारत जैसे अन्य देशों में कारोबार का विस्तार कर रही हैं।

आने वाले सालों में, भारत और अमेरिका के बीच बाइलेटरल ट्रेड बढ़ता रहेगा। भारत एक इंडो–पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क स्थापित करने के लिए अमेरिका के नेतृत्व वाली पहल में शामिल हो गया है और इस कदम से आर्थिक संबंधों को बढ़ाने में मदद मिलेगी।'

अमेरिका उन कुछ देशों में से एक है जिनके साथ भारत का ट्रेड सरप्लस है। 2021–22 में, भारत का अमेरिका के साथ 32.8 अरब डॉलर का ट्रेड सरप्लस था। आंकड़ों से पता चलता है कि 2013–14 से 2017–18 तक और 2020–21 में भी भारत का टॉप ट्रेड पार्टनर चीन था।

चीन से पहले यूएई देश का सबसे बड़ा ट्रेड पार्टनर था। 2021–22 में 72.9 अरब डॉलर के साथ संयुक्त अरब अमीरात भारत का तीसरा सबसे बड़ा ट्रेड पार्टनर था। इसके बाद सऊदी अरब (42,85 अरब डॉलर), इराक (34.33 अरब डॉलर) और सिंगापुर (30 अरब डॉलर) का स्थान है। ❑❑

https://www.bhaskar.com/business/news/america-became-indias-largest-trading-partner-surpassing-china-to-become-number-1-129866708/

स्वदेशी गतिविधियां

स्वावलंबी भारत अभियान – कार्यशालाएं

सचित्र झलक

बेंगलूरु, कर्नाटक

गुंतूर, आंध्र प्रदेश

पूर्वी एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश

विदर्भ प्रांत

स्वदेशी पत्रिका डाक तिथि 15–16 जुलाई 2022
एल.पी.सी. दिल्ली, दिल्ली पी.एस.ओ., दिल्ली आर.एम.एस. दिल्ली–06
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह 10 तारीख

डाक पंजी. संख्या DL-SW/1/4074/2021-23
रजि. आर.एन.आई. पंजी. संख्या 64697/96

स्वदेशी गतिविधियां

स्वावलंबी भारत अभियान – कार्यशालाएं

सचित्र झलक

नागपुर, महाराष्ट्र

बोकारो, झारखंड

बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक व मुद्रक ईश्वरदास महाजन द्वारा स्वदेशी जागरण समिति के लिए काम्पीटेंट बाईन्डर्स (प्रिंटिंग यूनिट), नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित और धर्मक्षेत्र, सेक्टर–8, रामाकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022 से प्रकाशित, संपादकः अजेय भारती